कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन), मुंबई

आँचल

(23वाँ अंक, अप्रैल 2025 - अगस्त 2025)

(कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन), मुंबई की विभागीय अर्द्ध-वार्षिक हिंदी पत्रिका)

आँचल परिवार

संरक्षक

श्री विजय एन. कोठारी
प्रधान निदेशक

दिग्दर्शन

सुश्री अनिता सिंह
निदेशक (प्रतिवेदन)

प्रबंध संपादक

सुश्री मोनाली फड़तरे
निदेशक (प्रशासन)

संपादकीय परामर्श

श्री सुशील टोपनो, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)
सुश्री शिवानी, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)

संपादक

श्री जय राम सिंह, क. अनुवादक

अस्वीकरण (डिस्क्लेमर) - कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन), मुंबई की विभागीय हिंदी पत्रिका "आँचल" का मुख्य उद्देश्य राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार है । इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार हैं और यह आवश्यक नहीं कि कार्यालय उन विचारों से सहमत हो।

संरक्षक की कलम से

भारत के संविधान के अनुच्छेद 343 के प्रावधानों के अनुसार हिंदी भारत संघ की राजभाषा है । हिंदी सही मायनों में देश की सिर्फ राजभाषा ही नहीं, अपितु कामकाज की भाषा बने, इसकी जिम्मेवारी हम सबों की है । सरकारी कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के प्रति रचनात्मक रुचि के संवर्द्धन में विभागीय हिंदी पत्रिकाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है।

इसी क्रम में कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन), मुंबई अपनी विभागीय अर्द्ध-वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका "आँचल“ का नियमित प्रकाशन कर रहा है जो हर्ष की बात है । इससे भी अधिक खुशी की बात यह है कि कार्यालय के अधिकारी / कर्मचारी उत्साहपूर्वक हिंदी में अपनी रचनाएँ लिखकर पत्रिका की गुणवत्ता और पठनीयता, दोनों की अभिवृद्धि में अपना योगदान दे रहे हैं ।

हिंदी विश्व-पटल पर भारत का प्रतिनिधित्व करती है । भारत के हर हिस्से में हिंदी को बोलने या समझनेवाले लोग मिल जाते हैं । इस तरह हिंदी भारत की राष्ट्रीय एकता एवं संवाद की सूत्रधार की भूमिका अदा करती है । संस्कृत को छोड़ दें तो हिंदी संभवतः विश्व की एकमात्र भाषा है जो जैसी बोली जाती है वैसी ही लिखी भी जाती है । पिछले 79 वर्षों में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में हमने काफी प्रगति की है, परंतु बहुत कुछ अभी करना है । मैं कार्यालय के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों से यह अपेक्षा करता हूँ कि वे अधिक से अधिक मौलिक काम हिंदी में करें और राजभाषा के सम्यक प्रचार-प्रसार में अपना योगदान दें ।

मैं संपादक-मंडल सहित कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई देता हूँ जिन्होंने पत्रिका के इस अंक को मूर्त रूप देने में अपना अमूल्य योगदान दिया है । मेरी कामना है कि यह पत्रिका इसी सहजता एवं सरलता से राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपनी भूमिका निभाती रहे एवं निरंतर प्रगति करती रहे ।

विजय एन. कोठारी
प्रधान निदेशक

दिग्दर्शन

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन), मुंबई अपनी विभागीय हिंदी पत्रिका “आँचल“ को नियमित रूप से अर्द्ध-वार्षिक आधार पर प्रकाशित करता है । एक छोटा कार्यालय होने के बावजूद पत्रिका का नियमित प्रकाशन राजभाषा हिंदी के प्रति कार्यालयकर्मियों की निष्ठा एवं समर्पण को परिलक्षित करता है । इस पत्रिका का 23वाँ अंक पाठकों के बीच देखकर अच्छा लग रहा है ।

काम के भारी दवाब के बावजूद कार्यालय के कार्मिकों ने इस पत्रिका के लिए सामग्री लिखने में जो उत्साह दिखाया है, वह प्रशंसनीय है । भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग के अधिकारियों / कर्मचारियों के काम में लेखन एक आवश्यक तत्व है जिसको परिवर्धित करने में यह पत्रिका महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है ।

हिंदी में मौलिक काम करना अत्यधिक आसान है । ज़रूरत सिर्फ शुरु करने की है । एक बार हिंदी में काम करना शुरु कर दें तो लगातार हिंदी में काम करना आनंद देने लगता है । मुझे आशा ही नहीं, वरन् पूर्ण विश्वास है कि कार्यालय के सभी अधिकारी / कार्मिक अपना-अपना मौलिक काम अधिक से अधिक हिंदी में करेंगे और राष्ट्रीय गौरव को महसूस करेंगे ।

मैं आशा करती हूँ कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रति लोगों में नवीन उत्साह का संचार करेगी। पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी लोगों को हार्दिक बधाई ।

अनिता सिंह
निदेशक (प्रतिवेदन)

संदेश

हिंदी भारत की राजभाषा है । इस नाते हिंदी की अपनी प्रतिष्ठा है एवं दायित्व भी है । प्रतिष्ठा इस रूप में कि यह वैश्विक मंचों पर भारत का प्रतिनिधित्व करती है । दायित्व इस अर्थ में कि हिंदी को भारतीय संविधान की अष्टम अनुसूची में सूचीबद्ध समस्त 22 भाषाओं को प्रोत्साहन देते हुए भाषाई समरसता एवं समावेशिकता के माध्यम से स्वयं भारत की राजभाषा और कामकाज की भाषा बने । केन्द्र सरकार के विभिन्न कार्यालय हिंदी में मौलिक कार्य का माहौल बनाने के उद्देश्य से हिंदी पत्रिकाओं का प्रकाशन करते हैं ।

इसी कड़ी में कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन), मुंबई की विभागीय हिंदी पत्रिका "आँचल" अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाने में सफल सिद्ध हुई है । कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन), मुंबई की विभागीय हिंदी पत्रिका "**आँचल**" कार्मिकों को विभिन्न विषयों पर अपने मनोभावों को प्रकट करने के लिए एक सार्थक एवं सारस्वत मंच प्रदान करती है । मुझे आशा ही नहीं, वरन पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका निरंतर प्रगति-पथ पर अग्रसर रहते हुए राजभाषा हिंदी के प्रति अपने उत्तरदायित्व को कुशलतापूर्वक निभाने में समर्थ सिद्ध होगी ।

आशा करती हूँ कि कार्यालय के सभी अधिकारी व कर्मचारी भविष्य में भी इस पत्रिका को उत्कृष्ट और ज्ञानवर्द्धक बनाने के प्रति अपना उत्साह और सहयोग इसी तरह बनाए रखेंगे । हिंदी भी भारत की किसी भी अन्य क्षेत्रीय भाषा की तरह ही यहाँ की मिट्टी की उपज है और इस नाते भारतीय संस्कारों से लबरेज है ।

मोनाली फड़तरे

निदेशक (प्रशासन)

अनुक्रमणिका

संरक्षक की कलम से			2	
दिग्दर्शन			3	
संदेश			4	
संपादकीय			6	
क्रम संख्या	**रचना का शीर्षक**		**रचनाकार**	**पृष्ठ संख्या**
1	स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि			8
2	जो लौट के घर न आए			12
3	आजकल	कविता	सुश्री अनिता सिंह	15
4	दो कविताएँ	कविता	सश्री मंजरी सारस्वत	16
5	क्या सच है यह कहानी	कविता	सुश्री रितू मोटवानी	17
6	खेल	कविता	सुश्री प्रतिभा वर्मा	18
7	नारी-सम्मान : राष्ट्र का अभिमान	कविता	श्रीमती सारिका ए साळवे	19
8	**उत्तराखंड - अध्यात्म और प्राकृतिक सौंदर्य की जादुई धरती**	कविता	श्री सुधांशु रावत	20
9	सरकारी दफ्तर का इंटरनेट	कविता	श्री अजिंक्य साळवे	22
10	पहाड़ों का गीत	कविता	श्री अभय भंडारी	23
11	काश ! मेरे बच्चे भी ऐसे होते	कहानी	श्री विजय एन कोठारी	24
12	पाँव-पतन	निबंध	श्री अनिल मेनन	26
13	कारगिल-योद्धा	लघुकथा	सुश्री मोनाली फड़तरे	29
14	छुन्नू	संस्मरण	सुश्री पूजा चौधरी	31
15	विपश्यना	निबंध	श्री प्रदीप जाधव	33
16	विश्वकर्मा की ईमानदारी	लघुकथा	श्री प्रवीण नाफड़े	35
17	बचपन	ललित निबंध	सुश्री शिवानी	36
18	मेरी अविस्मरणीय ट्रेकिंग	यात्रा वृत्तांत	श्रीमती वीणा शिरशाट	38
19	**सरकारी कम्प्यूटर का धीमापन : एक आध्यात्मिक अनुभव**	हास्य-व्यंग्य	श्री सचिन पन्नू	40
20	घर से दूर मेरी पहली सरकारी नौकरी	संस्मरण	सुश्री शिवानी वर्मा	42
21	रेगिस्तान और कुआँ	निबंध	सुश्री प्रिया सिंह	44
21	आत्मा की जिम्मेदारी	निबंध	श्री नितिन राजपुरोहित	46
22	सफरनामा	ललित निबंध	सुश्री शिवानी	49
23	झेलम से गंगा तक	संस्मरण	श्री जय राम सिंह	50
24	सरकारी कार्यालय और पर्यावरण संरक्षण	निबंध	श्री अनिल पूनिया	54
25	राजभाषा अधिनियम 1963			56
26	राजभाषा नियम 1976			59
27	आपके पत्रः आपकी प्रतिक्रियाएँ			63
28	नियुक्तियाँ/पदोन्नतियाँ/स्थानांतरण/सेवानिवृत्ति			64

हिंदी में काम करना आसान है : शुरु तो कीजिए !

जय राम सिंह
कनिष्ठ अनुवादक

केन्द्र सरकार के लगभग सभी कार्यालयों में अब कागज-रहित कामकाज (Paperless working) का वातावरण बन चुका है । ई-ऑफिस सॉफ्टवेयर इस दिशा में महती भूमिका निभा रहा है । भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग ई-ऑफिस के अलावा भी ऐसे कई सॉफ्टवेयरों की मदद से अपना दैनंदिन कामकाज संपादित कर रहा है जिससे कागज-रहित कामकाज की परिकल्पना साकार हो सके। इस परिकल्पना की सफलता सिर्फ हमारे पर्यावरण के संरक्षण के लिए ही नहीं, अपितु सूचना एवं तथ्यों के संरक्षण एवं समय पर उपयोग के लिए उपलब्धता की दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है ।

ई-ऑफिस सॉफ्टवेयर की एक विशेषता यह है कि इसमें सीधे कंठस्थ सॉफ्टवेयर के तात्कालिक अनुवाद लिंक को उपलब्ध करा दिया गया है । इस लिंक के उपलब्ध होने से ई-ऑफिस में हिंदी में काम करना अब और भी आसान हो गया है । इसके अतिरिक्त भी कई ऐसे सॉफ्टवेयर टूल्स इंटरनेट पर निःशुल्क उपलब्ध हैं जिनकी मदद से हिंदी में आसानी से काम किया जा सकता है । सिर्फ एक ज़रूरत है और वह कि हम सभी अपनी इच्छाशक्ति जगाएँ । एक बार मन में ठान लिया तो हिंदी में काम करना अत्यधिक आसान लगने लगेगा क्योंकि हिंदी एकमात्र भाषा है जो जैसी बोली जाती है, वैसी ही लिखी जाती है । फिर भी यदि कोई ऐसा शब्द आ जाए जिसका हिंदी समतुल्य उपलब्ध न हो, तो उस शब्द को जैसे का तैसा देवनागरी लिपि में लिख दीजिए, बस आपका काम हो गया ।

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन), मुंबई राजभाषाई दृष्टि से देश के 'ख' क्षेत्र में अवस्थित है जो महाराष्ट्र राज्य की राजधानी भी है । इस राज्य की मातृभाषा मराठी है जिसकी लिपि भी हिंदी की ही तरह देवनागरी है । मराठी और हिंदी भाषाओं में सिर्फ लिपि की ही समानता नहीं हैं, बल्कि बहुत सारे शब्दों की भी समानता है ।

हमारा कार्यालय सिर्फ संख्याबल की दृष्टि से ही एक छोटा-सा कार्यालय है, काम की दृष्टि से नहीं। काम के भार से जूझ रहे अधिकारियों और कर्मचारियों से हिंदी में सृजनात्मक लेखन की अपेक्षा करना कई बार अनुचित लगता है । लेकिन यही वह स्थिति होती है जहाँ नेतृत्व अपना कमाल दिखाता है । जब कार्यालय के सर्वोच्च प्राधिकारीगण स्वयं अपनी-अपनी रचनाओं से पत्रिका को अभिसिंचित करते हैं तब उनका यह काम अन्य अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए प्रेरणादायी होता है । इस अंक को पढ़कर आपको ऐसा ही लगेगा । प्रधान निदेशक महोदय और अन्य दो ग्रुप अधिकारियों की रचनाओं से प्रेरित होकर वैसे अधिकारियों और कर्मचारियों ने भी पत्रिका को अपना रचनात्मक सहयोग दिया है जो आम तौर पर इतने व्यस्त होते हैं कि अपने परिवार को भी पर्याप्त समय नहीं दे पाते । कार्यालयकर्मियों का रचना-वैविध्य इस अंक की विशेषता है । कहीं बड़ी बात कोमल ढंग से कहती कविता है तो कहीं

मनोवैज्ञानिक लेख हैं, कहीं हास्य-व्यंग्य का पुट है तो कहीं साहसिक ट्रेंकिंग का आँखोंदेखा हाल है । कहीं एक सैनिक की रोमानी आपबीती है तो कहीं अध्यात्म का गंभीर चिंतन । अर्थात् इस अंक में एक ही जगह वह सब कुछ है जो अपने पाठकों का बौद्धिक मनोरंजन करने में सक्षम है । इस अंक की विशेषता है कि पदानुक्रम में सर्वोच्च और कनिष्ठतम (प्रधान निदेशक महोदय से लेकर बहुकार्य कार्मिक तक), सभी स्तरों के रचनाकारों की एक से बढ़कर एक अद्भुत रचनाएँ आई हैं जो निश्चय ही अपने पाठकों को समुल्लसित करेंगी एवं उन्हें भी राजभाषा हिंदी में सृजनात्मक लेखन की ओर प्रेरित करेंगी ।

तुम रूप कर्म से मुक्त, शब्द के पंख मार,
कर सको सुदूर मनोनभ में जन के विहार,
वाणी मेरी, चाहिए तुम्हें क्या अलंकार !

- सुमित्रानंदन पंत

स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि

(हमारी गृह पत्रिका "आँचल" का यह नियमित स्तम्भ है । इस अंक में हम देश के स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लेकर अपना सर्वस्व न्योछावर कर देनेवाले वीर सपूतों के बलिदानों का स्मरण कर उन्हें कृतज्ञतापूर्वक श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं । आज हम सभी आजाद देश के नागरिक हैं क्योंकि बीते हुए कल में इन असंख्य वीर सेनानियों ने हमारे 'आज' को सुखमय बनाने के लिए अपने 'आज' की आहुति दे दी थी । इस अंक में हम दक्षिणी राज्य तमिलनाडु के रहनेवाले स्वतंत्रता के वैसे नायकों की गाथाएँ सामने लाने का प्रयास कर रहे हैं जिनकी अधिक चर्चा नहीं होती । इन्हें इतिहास में वह स्थान नहीं मिला जिसके वे अधिकारी हैं - संपादक)

श्री गणपति दीक्षितार सुब्रमण्यम अय्यर

गणपति दीक्षितार सुब्रमण्यम अय्यर (19 जनवरी 1855 - 18 अप्रैल 1916) एक प्रमुख भारतीय पत्रकार, समाज सुधारक और स्वतंत्रता सेनानी थे, जिन्होंने 20 सितंबर 1878 को द हिंदू नामक अंग्रेजी समाचार पत्र को लॉन्च करने में ट्रिप्लिकेन सिक्स का नेतृत्व किया था। वह 20 सितंबर 1878 से अक्टूबर 1898 तक द हिंदू के मालिक, संपादक और प्रबंध निदेशक थे। तमिल भाषा के समाचार पत्र 'स्वदेशमित्रन' की स्थापना भी उन्होंने 1891 में की थी।

सुब्रमण्यम अय्यर ने 20 सितंबर 1878 को एम. वीरराघवाचार्य, टी. टी. रंगाचारियार, पी. वी. रंगाचारियार, डी. केशव राव पंतुलु और एन. सुब्बा राव पंतुलु के साथ मिलकर द हिंदू की स्थापना की। शुरुआत में, द हिंदू को एक साप्ताहिक के रूप में शुरू किया गया था लेकिन उसकी बढ़ती लोकप्रियता के कारण बाद में उसे दैनिक समाचार पत्र का रूप दे दिया गया ।

सुब्रमण्यम अय्यर ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। वह 12 दिसंबर 1885 को तेजपाल संस्कृत महाविद्यालय में आयोजित बॉम्बे सम्मेलन में

उपस्थित 72 प्रतिनिधियों में से एक थे, जिसके परिणामस्वरूप भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के दूसरे सत्र में, सुब्रमण्यम अय्यर को सार्वजनिक सेवाओं में भारतीयों के प्रतिनिधित्व पर रिपोर्ट करने के लिए समिति का सदस्य चुना गया था। 1887 के मद्रास सत्र में, सुब्रमण्यम अय्यर को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के संविधान का निर्माण करने वाली समिति का सदस्य नियुक्त किया गया था। 1894 के मद्रास सत्र के दौरान, उन्हें उस प्रतिनिधिमंडल के हिस्से के रूप में चुना गया जिसने लंदन में भारत के सचिव के समक्ष भारतीय राष्ट्रवादियों का मामला प्रस्तुत किया। जब 1906 में गांधी सर फिरोजशाह मेहता के मार्गदर्शन में दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों की स्थिति के बारे में जानकारी फैलाने के लिए मद्रास आए थे। तब गांधीजी ने पचैयप्पा के हॉल में श्री सुब्रमण्यम अय्यर से मुलाकात की थी । गांधी ने स्वयं इस घटना का उल्लेख अपनी पुस्तक "सत्य के साथ मेरे प्रयोग" में किया है। उन्हें भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के उद्देश्यों को बढ़ावा देने के लिए गठित स्थायी समिति का सदस्य नियुक्त किया गया। वे मद्रास महाजन सभा (1884) के संस्थापक सदस्यों में से एक थे, जिसने मद्रास प्रेसीडेंसी में स्थानीय राष्ट्रवादी प्रयासों का समन्वय किया।

सुब्रमण्यम अय्यर की कलम "अति तीखी पतली हरी मिर्च के पेस्ट में डूबी हुई" थी - जैसा कि सुब्रमण्यम भारती ने अपने संपादक की लेखन शैली के बारे में कहा था - जिसके कारण 1908 में उन्हें अंग्रेजों से परेशानी हुई। उन्हें जेल की सज़ा और उत्पीड़न सहना पड़ा जिससे धीरे-धीरे उनका स्वास्थ्य बिगड़ता गया।

अपने अंतिम वर्षों में, सुब्रमण्यम अय्यर को कुष्ठ रोग का पता चला और 18 अप्रैल 1916 को इस बीमारी से उनकी मृत्यु हो गई।

(आँचल परिवार देशप्रेम, नेतृत्व, साहस और बलिदान की अदम्य मूर्ति अमर स्वतंत्रता-सेनानी श्री गणपति दीक्षितार सुब्रमण्यम अय्यर को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है।)

जला अस्थियाँ बारी-बारी / चिटकाईं जिनमें चिन्गारी
जो चढ़ गए पुण्यवेदी पर लिए बिना गर्दन का मोल
कलम आज उनकी जय बोल !

- श्री रामधारी सिंह 'दिनकर'

श्री वी ओ चिदम्बरम पिल्लई

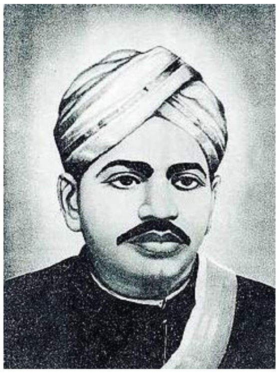

श्री वल्लीनायागम ओलागनाथन चिदंबरम पिल्लई (5 सितंबर 1872 - 18 नवंबर 1936) एक भारतीय स्वतंत्रता सेनानी, वकील, व्यापारी, तमिल विद्वान और राजनीतिज्ञ थे। उन्होंने ब्रिटिश इंडिया स्टीम नेविगेशन कंपनी (BISNC) के एकाधिकार के खिलाफ प्रतिस्पर्धा करने के लिए 1906 में स्वदेशी स्टीम नेविगेशन कंपनी की स्थापना की।

उन्होंने ब्रिटिश भारत में तूतीकोरिन और सीलोन में कोलंबो के बीच पहली स्वदेशी भारतीय शिपिंग सेवा शुरू की। एक बार भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सदस्य होने के बाद, उन पर ब्रिटिश सरकार ने राजद्रोह का आरोप लगाया और आजीवन कारावास की सजा सुनाई, और उनका बैरिस्टर लाइसेंस रद्द कर दिया गया। उन्हें कप्पलोट्टिया तमिझन ("तमिल कर्णधार") की उपाधि से जाना जाता है ।

(आँचल परिवार देशप्रेम, नेतृत्व, साहस और बलिदान की अदम्य मूर्ति अमर स्वतंत्रता-सेनानी श्री वी ओ चिदम्बरम पिल्लई को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है ।)

श्री एफ. जी. नटेसा अय्यर

एफ. जी. नटेसा अय्यर (11 नवंबर 1880 - 23 जनवरी 1963) भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के एक भारतीय कार्यकर्ता थे। वे आधुनिक तमिल नाटक और तमिल सिनेमा के अग्रदूतों में से एक थे। वे एक प्रतिभा खोजकर्ता थे जिन्होंने कई प्रतिभाओं को पहचाना और कई युवाओं को प्रोत्साहित किया, जो आगे चलकर कर्नाटक संगीत के महान कलाकार बने।

वे 1914 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल हुए और बंबई (1915), लखनऊ (1916) और मद्रास (1917) के अधिवेशनों में एक प्रमुख प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया। लखनऊ अधिवेशन में वे विषय समिति के सदस्य थे और कांग्रेस-भारतीय मुस्लिम लीग की सुधार योजना पर चर्चा में भाग लिया। 1917 में मद्रास अधिवेशन में वे त्रिचिरापल्ली से एक प्रतिनिधि, अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के निर्वाचित सदस्य, विषय समिति के सदस्य थे और उन्हें खुले सत्र में गिरमिटिया श्रम पर प्रस्ताव पेश करने का सम्मान प्राप्त हुआ था। वे उन वर्षों के भारतीय होम रूल आंदोलन के समर्थक थे और श्रीमती एनी बेसेंट, जॉर्ज अरुंडेल और बी. पी. वाडिया की नजरबंदी के बाद मद्रास प्रांतीय सम्मेलन में पारित निष्क्रिय प्रतिरोध प्रस्ताव के पक्ष में थे। इनकी राजनीतिक प्रखरता को देखते हुए अँग्रेजों ने इन पर कई प्रकार की पाबंदियाँ लगाईं, कारागार में भी डाला, लेकिन श्री अय्यर अपने लक्ष्य से विचलित नहीं हुए ।

(आँचल परिवार देशप्रेम, नेतृत्व, साहस और बलिदान की अदम्य मूर्ति अमर स्वतंत्रता-सेनानी श्री एफ. जी. नटेसा अय्यर को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है ।)

जब अंत समय आया तो कह गए कि अब चलते हैं
खुश रहना देश के यारों अब हम तो सफ़र करते हैं ।
जो ख़ून गिरा पर्वत पर वह ख़ून था हिन्दुस्तानी
जो शहीद हुए हैं उनकी ज़रा याद करो कुर्बानी ।

- कवि प्रदीप

जो लौट के घर न आए

(हमारी विभागीय गृह-पत्रिका आँचल के इस नियमित स्तम्भ में हम देश और देशवासियों की रक्षा में पिछले एक वर्ष में सर्वोच्च बलिदान देनेवाले वीर सपूतों के बलिदानों का स्मरण कर उन्हें कृतज्ञतापूर्वक श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं। हमारा देश एक ओर जहाँ चीन, पाकिस्तान, आतंकवाद जैसी बाहरी चुनौतियों से मुकाबला कर रहा है, वहीं दूसरी ओर प्राकृतिक और मानव जनित आपदाओं से भी लोहा ले रहा है । इस स्तंभ में देश के ऐसे रण-बाँकुरों की रण-गाथाएँ सुनाने का प्रयास किया जाता है जिन्होंने देश के प्रति अपने कर्तव्य को सबसे ऊपर रखा और ज़रूरत पड़ने पर सर्वोच्च बलिदान देने से भी पीछे नहीं हटे । अपनी मातृभूमि की आन, बान और शान की रक्षा में ऐसे समर्पित होकर घर से निकले कि कभी लौट नहीं पाए । आशा है कि आप सुधी पाठकों को हमारा यह विनम्र प्रयास अच्छा लगेगा - संपादक)

कर्नल मनप्रीत सिंह, कीर्ति चक्र, सेना मेडल

कर्नल मनप्रीत सिंह, कीर्ति चक्र, सेना मेडल (जन्म, 1982) भारतीय सेना के एक सम्मानित अधिकारी थे, जो अनंतनाग में एक ऑपरेशन के दौरान तीन अन्य सुरक्षाकर्मियों के साथ शहीद हो गए थे। इस कार्रवाई में उनकी बहादुरी के लिए, उन्हें मरणोपरांत भारत के दूसरे सर्वोच्च शांतिकालीन वीरता पुरस्कार, कीर्ति चक्र से सम्मानित किया गया।

2023 के दौरान, 19 आरआर (राष्ट्रीय राइफल्स) को आतंकवाद विरोधी अभियानों के लिए जम्मू और कश्मीर के अनंतनाग जिले में तैनात किया गया था। पिछले 5 वर्षों की अवधि में, लेफ्टिनेंट कर्नल मनप्रीत सिंह ने कई अभियानों में भाग लिया और 2021 में वीरता के लिए सेना मेडल से सम्मानित किए गए थे। 13 सितंबर 2023 को, सुरक्षा बलों खुफिया सेवाओं से दक्षिण कश्मीर के अनंतनाग जिले के कोकेरनाग के गड्डूल गांव के आसपास के घने जंगलों में कुछ कट्टर आतंकवादियों की मौजूदगी की सूचना मिली। उसी रात 19 आरआर और जम्मू-कश्मीर पुलिस की एक संयुक्त टीम उस स्थान पर भेजी गई। जब टीम पहुंची, तो छिपे हुए आतंकवादियों ने अपने भागने को कवर करने के लिए भारी गोलाबारी शुरू कर दी। कर्नल मनप्रीत सिंह ऑपरेशन की कमान संभाल रहे थे और उन्होंने अपने सैनिकों को गोलीबारी शुरू करने का आदेश दिया। भीषण गोलीबारी चल रही थी। ऑपरेशन में कर्नल मनप्रीत सिंह, मेजर आशीष धोंचक, 19 आरआर के सिपाही प्रदीप सिंह और जम्मू-कश्मीर पुलिस के डीएसपी हुमायूं भट्ट शहीद हो गए। कर्नल सिंह की बहादुरी, विरासत और नेतृत्व के लिए, उन्हें 15 अगस्त 2024 को मरणोपरांत भारत के दूसरे सर्वोच्च शांतिकालीन वीरता पुरस्कार, कीर्ति चक्र से सम्मानित किया गया।

(आँचल परिवार देशप्रेम, नेतृत्व, साहस और बलिदान की अदम्य मूर्ति अमर शहीद कर्नल मनप्रीत सिंह, कीर्ति चक्र, सेना मेडल को कृतज्ञ राष्ट्र की तरफ से सैल्यूट एवं भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है ।)

राइफलमैन रवि कुमार, सेना मेडल

फरवरी 2017 के दौरान, राइफलमैन रवि कुमार की यूनिट को जम्मू व कश्मीर के बांदीपोरा जिले में तैनात किया गया था। 13 फरवरी को, रवि कुमार की यूनिट को खुफिया सूत्रों से सूचना मिली कि इसके AOR (जिम्मेदारी के क्षेत्र) में पड़ने वाले एक इलाके में कुछ कट्टर आतंकवादी छिपे हुए हैं।

परिणामस्वरूप, 14 फरवरी, 2017 की सुबह, राइफलमैन रवि कुमार की यूनिट 31 राष्ट्रीय राइफल्स, जम्मू व कश्मीर पुलिस के विशेष अभियान समूह और केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने बांदीपोरा के पार्रे मोल्लाह इलाके में एक दो मंजिला घर में छिपे हुए आतंकवादियों को पकड़ने के लिए एक अभियान शुरू किया। जब सुरक्षा बल तलाशी अभियान चला रहे थे, छिपे हुए आतंकवादियों ने उन पर गोलीबारी की । सुरक्षा बलों ने भी जवाबी कार्रवाई की और उसके बाद भीषण गोलीबारी शुरू हो गई।

भारी गोलीबारी के दौरान, राइफलमैन रवि कुमार, कैप्टन धर्मेंद्र कुमार और गनर संतोष कुमार सहित पंद्रह सुरक्षाकर्मी घायल हो गए और उन्हें श्रीनगर के एक सैन्य अस्पताल में भर्ती कराया गया। इस ऑपरेशन में, लश्कर-ए-तैयबा के एक शीर्ष कमांडर सहित कई आतंकवादियों को मार गिराया गया। हालाँकि, राइफलमैन रवि कुमार, कैप्टन धर्मेंद्र कुमार और गनर संतोष कुमार बाद में अपनी चोटों के कारण शहीद हो गए। राइफलमैन रवि कुमार एक बहादुर और समर्पित सैनिक थे जिन्होंने राष्ट्र की सेवा में अपने प्राण न्यौछावर कर दिए। राइफलमैन रवि कुमार को उनके सराहनीय साहस, कर्तव्यनिष्ठा और सर्वोच्च बलिदान के लिए वीरता पुरस्कार, 'सेना पदक' से सम्मानित किया गया।

(आँचल परिवार देशप्रेम, पराक्रम, नेतृत्व, साहस और बलिदान की अदम्य मूर्ति अमर शहीद राइफलमैन रवि कुमार, सेना मेडल को कृतज्ञ राष्ट्र की तरफ से सैल्यूट एवं भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है ।)

श्री हुमायूँ भट्ट, कीर्ति चक्र

जम्मू व कश्मीर पुलिस के डीएसपी श्री हुमायूँ भट्ट एक जाँबाज अधिकारी थे । उन्होंने अनंतनाग जिले के गडोल इलाके में कट्टर आतंकवादियों से लोहा लेते हुए अपना सर्वोच्च बलिदान दिया ।

2023 के दौरान, 19 आरआर (राष्ट्रीय राइफल्स) को आतंकवाद विरोधी अभियानों के लिए जम्मू और कश्मीर के अनंतनाग जिले में तैनात किया गया था। पिछले 5 वर्षों की अवधि में, लेफ्टिनेंट कर्नल मनप्रीत सिंह ने कई अभियानों में भाग लिया और 2021 में वीरता के लिए सेना मेडल से सम्मानित किए गए थे। 13 सितंबर 2023 को, सुरक्षा बलों खुफिया सेवाओं से दक्षिण कश्मीर के अनंतनाग जिले के कोकेरनाग के गड्डूल गांव के आसपास के घने जंगलों में कुछ कट्टर आतंकवादियों की मौजूदगी की सूचना मिली। उसी रात 19 आरआर और जम्मू-कश्मीर पुलिस की एक संयुक्त टीम उस स्थान पर भेजी गई। जब टीम पहुंची, तो छिपे हुए आतंकवादियों ने अपने भागने को कवर करने के लिए भारी गोलाबारी शुरू कर दी। कर्नल मनप्रीत सिंह ऑपरेशन की कमान संभाल रहे थे और उन्होंने अपने सैनिकों को गोलीबारी शुरू करने का आदेश दिया। भीषण गोलीबारी चल रही थी। ऑपरेशन में कर्नल मनप्रीत सिंह, मेजर आशीष धोंचक, 19 आरआर के सिपाही प्रदीप सिंह और जम्मू-कश्मीर पुलिस के डीएसपी हुमायूं भट्ट शहीद हो गए। डीएसपी भट्ट की बहादुरी, विरासत और नेतृत्व के लिए, उन्हें 15 अगस्त 2024 को मरणोपरांत भारत के दूसरे सर्वोच्च शांतिकालीन वीरता पुरस्कार, कीर्ति चक्र से सम्मानित किया गया।

(आँचल परिवार देशप्रेम, पराक्रम, नेतृत्व, साहस और बलिदान की अदम्य मूर्ति अमर शहीद श्री हुमायूँ भट्ट, कीर्ति चक्र को कृतज्ञ राष्ट्र की तरफ से सैल्यूट एवं भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है ।)

हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्रोत है - सुमित्रानंदन पंत

आजकल

सुश्री अनिता सिंह
निदेशक (प्रतिवेदन)

वक्त है बड़ा विचित्र सा
थमा थमा और उदासीन सा
अनिश्चितताओं के दौर में जैसे
खोया हो,
खुदा भी कहीं आजकल

कहने को तो जीते हैं हमने जग कई बार
गिर कर भी संभले हैं हम कल भी
फिर भी भयावह है ये बेबसी
और गिर कर,
न उठ पाने का एहसास आजकल

मानव भयभीत है फिर आज मानव से
हार सा रहा है जंग फिर प्रकृति से
प्रकृति के सामंजस्य को छेड़ना पड़ रहा भारी
दंड की अथाहता को,
नापना भी हो रहा मुश्किल आजकल

कहीं तो रोशनी होगी कोई उम्मीद की किरण
झींनी सी रोशनी लिए संग
भरेगी जो आस दिल में फिर से सृजन की
पल्लवित हों कोंपलें जिसकी,
इन्हीं तांडवरूपी पलों में आजकल

दो कविताएँ

सुश्री मंजरी सारस्वत
लेखापरीक्षक

कलियुग की राधा

तुम कलियुग की राधा हो
तुम पूज्य न हो पाओगी

कितना भी अलौकिक और नैतिक
प्रेम हो तुम्हारा
तुम दैहिक पैमाने पर नाप दी जाओगी

तुम मित्र ढूँढ़ोगी
वे प्रेमी बनना चाहेंगे
तुम आत्मा सौंप दोगी
वे देह पर घात लगाएँगे
पूर्ण समर्पित होकर भी
तुम 'राधा' ही रहोगी
'रुक्मिणी' न बन पाओगी

पुरुष किसी भी युग के हों
वे पुरुष हैं
अतः सम्माननीय हैं
तुम तो स्त्री हो
तुम ही चरित्रहीन कहलाओगी

वह युग और था
यह युग और है
तब 'राधा' होना
पूज्य था
अब 'राधा' होना हेय है
तुम विकल्प ही रहोगी
प्राथमिकता न हो पाओगी

एक पुरुष होकर जो
स्त्री की 'मित्रता' की मर्यादा समझे
निःस्वार्थ प्रेम से उसे पोषित करे
समाज की दूषित नज़रों से बचाकर
अपने हृदय में अक्षुण्ण रखे
वह 'मित्र' कहाँ से लाओगी ?
वह 'कृष्ण' कहाँ से लाओगी
तुम कलियुग की राधा हो
तुम पूज्य न हो पाओगी

मैं बैठी रही

कितना कुछ था
करने को
बालों में तेल डालकर
उन्हें सँवार सकती थी
आलमारी में बिखरे कपड़ों
में तह लगा सकती थी
पौधों को पानी दे सकती थी
कोई किताब पढ़ सकती थी
एक कप चाय के साथ बालकनी में
शाम गुजार सकती थी, पर
मैं बैठी रही तुम्हारी यादों के साथ
और
एक दिन फिर गुजर गया तुम्हारे साथ

क्या सच है, यह कहानी !

रितू मोटवानी
व.ले.प.अ.

क्या सच है, अपना देश कभी
थी एक सोने की चिड़िया ?
घर- घर वेदों की ध्वनि थी गूँजती
हर दिशाओं में था शंखनाद गूँजता

सही कहा तुमने बेटा मेरे
यह देश कभी थी सोने की चिड़िया
पर सोने की चिड़िया को पा कर
हम शेर पालना भूल गए

वेदों की ध्वनि भी थी गूँजती
घर - घर शंखनाद भी होता था
पर सुर- ताल के चक्कर में
हम त्रिशूल-बज्र को भूल गए

अतिथि देवो भव को याद रखा
पर रावण साधु के वेष में भी आता है
हर अतिथि साधु नहीं होता
राम - कथा हम भूल गए

सागर से सबको जीवन मिलता
सागर में अनमोल मोती होते
पर सागर में जहरीले नाग भी होते
हम नागों को नाथना भूल गए

पर बाबा, राम कथा तो घर-घर होती है
कृष्ण के गीत भी गाए जाते है
गीता का पाठ तो हर घर में होता
फिर हम पाँचजन्य को क्यों भूल गए?

जब हर मन में हो स्वार्थ भरा
पूजा पाठ बस दिखावा हो
जब कर्म - काण्ड प्रधान हो जाये
फिर धरती स्वयं ही नर्क बन जाता

जब "मैं" भारी हो जाये "हम" पर
जब राष्ट्र व्यक्ति से हो जाये छोटा
जब ऑंखों पर स्वार्थ की बंध जाये पट्टी
फिर राष्ट्र गुलाम यूँ ही हो जाता

पर बाबा, ऐसा मैंने बहुत सुना
कि मंत्रों में शक्ति होती है
मंत्रों से देव भी प्रसन्न होते
क्या मंत्रों से शत्रु जीता नहीं जाता ?

यह कर्म प्रधान युग है बेटा
यहाँ हाथों से पत्थर तोड़े जाते हैं
शत्रु परास्त करने के लिए
कुरुक्षेत्र में युद्ध जीते जाते हैं

बेटा, गीता, वेद, उपनिषद खूब पढ़ो
पर इनके संदेशों को समझो
अगर राष्ट्र संगठित नहीं होगा
फिर अपना राष्ट्र गुलाम होगा ....

प्रान्तीय ईर्ष्या-द्वेष को दूर करने में जितनी सहायता हिंदी प्रचार से मिलेगी, उतनी दूसरी किसी चीज़ से नहीं मिल सकती । - नेताजी सुभाषचंद्र बोस

खेल

सुश्री प्रतिभा वर्मा
लेखापरीक्षक

अधिकतर लोग समझते हैं कि
जिंदगी एक दायित्व है, उपहार है
कभी-कभी यह रेल है या खेल है
लेकिन
इसे ध्यान से समझो तो यह एक खेल है

एक महान खेल, लेन-देन का
जो कुछ भी दोगे, वही वापस आएगा
अगर नफरत दोगे, तो नफरत मिलेगा
प्यार दोगे तो प्यार
आलोचना के बदले आलोचना
अगर झूठ बोलोगे तो तुमसे भी झूठ बोला जाएगा
धोखा देने पर धोखा मिलेगा

अर्थात् सत्य का आमंत्रण मिलता है सत्य को
और असत्य बुलाता है असत्य को
हम जैसा बोते हैं वैसा ही काटते हैं
प्यार बढ़ता है जब हम उसे बाँटते हैं

जिंदगी के खेल में हार भी है और जीत भी
जिंदगी के खेल में शत्रु भी हैं और मीत भी
जिंदगी खेल है आत्म-नियंत्रण का
जिंदगी खेल है आत्मिक-संतुलन का

जिंदगी स्वयं ही सही राह दिखा देती है
जो पुस्तकें नहीं सिखा पातीं उसे जिंदगी सिखा देती है
जिंदगी से हम यह भी सीखते हैं कि
जीवन के इस खेल में कैसे प्रकृति अपना संतुलन बनाए रखती है

दो वर्तमान का सत्य सरल, सुंदर भविष्य के सपने दो
हिंदी है भारत की बोली, तो अपने आप पनपने दो

- श्री गोपाल सिंह नेपाली

नारी सम्मान : राष्ट्र का अभिमान

श्रीमती सारिका ए साळवे
पत्नी - श्री अजिंक्य साळवे,
लेखापरीक्षक

जिसने जन्म दिया, जिसने त्याग किया
जिसने अपने सपनों को पीछे छोड़ दिया
आज वही नारी जब रोती है अपने अपमान पर
तब आँसू छलकते हैं इस धरती पर आसमान पर

नारी की हँसी है घर का उजियारा
उसका सम्मान ही है सबसे बड़ा सहारा
जो उसे आँसू दे, वह मानव नहीं
नारी का अपमान राष्ट्र का अपमान है कही

मैं बेटी हूँ, सपनों की उड़ान
मेरे लिए क्यों छोटा है आसमान
मुझे पंख दो, मुझे उड़ान दो
मैं, मैं रहूँ ऐसा कोई विधान दो

सम्मान मिलेगा तभी देश खिलेगा
हर घर में उजियारा नया मिलेगा
नारी को जब यह देश सही प्रतिष्ठा देगा
तभी कहलाएगा सुंदर प्यारा न्यारा हिंदुस्तान

मैं दुर्गा हूँ, मैं काली हूँ
मैं ममता की गंगा भी निराली हूँ
मुझे पूजा जाता है मंदिर के द्वार पर
पर सम्मान चाहिए जीवन के हर द्वार पर

बना दो मुझे शक्ति का अभिमान
न हो कहीं अब मेरा अपमान
नारी को मिले जब सच्चा सम्मान
तभी सजेगा भारत महान

वर दे ! वीणावादिनी, वर दे !
प्रिय स्वतंत्र नभ अमृत-मंत्र नव भारत में भर दे !

- श्री सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

उत्तराखंड - आध्यात्म और प्राकृतिक सौंदर्य की जादुई धरती

सुधांशु रावत
लेखापरीक्षक

उत्तर भारत में हिमालय की गोद में बसा उत्तराखंड, केवल एक राज्य नहीं,
बल्कि वह दिव्य अनुभूति है
जहाँ प्रकृति और परमात्मा एक साथ साँस लेते हैं ।
जो मनुष्य को सात्विक जीवन की आस देते हैं ।
यहाँ की हवा में भक्ति है, घाटियों में शांति है, और पर्वतों पर ध्यान ।
क्यों न हो हमें इस दिव्य-भूमि पर अभिमान !
इसीलिए इसे "देवभूमि" कहा जाता है – ईश्वर की प्रिय भूमि,
जहाँ हर शिखर पर कोई देवता वास करता है
और हर झरना जैसे गंगा की वाणी बोलता है।

उत्तराखंड

उत्तराखंड की आत्मा आध्यात्म में बसती है।
यहाँ हर मार्ग तीर्थ बन जाता है,
हर धुन मंत्र हो जाती है,
और हर चढ़ाई मोक्ष की ओर ले जाती है।

बद्रीनाथ में विष्णु का धैर्य है,
केदारनाथ में शिव की शून्यता,
गंगोत्री में गंगा की करुणा,
और यमुनोत्री में माँ यमुना की ममता।

ऋषिकेश में गंगा के किनारे बैठा साधक जब आँखें बंद करता है,
तो लगता है मानो समूचा ब्रह्मांड उसकी आत्मा से बातें कर रहा हो।
हरिद्वार की संध्या आरती में जब हजारों दीप एक साथ बहते हैं,
तो वह केवल दृश्य नहीं होता - वह ईश्वर से सीधा संवाद होता है।

उत्तराखंड की घाटियाँ मौन में भी बोलती हैं।
हरे-भरे जंगल, नीले आसमान, और बर्फ से ढकी चोटियाँ
प्रकृति की ऐसी किताब हैं, जिसमें हर पत्ता एक श्लोक है
और हर झरना एक भजन।

औली की ढलानों पर फैली बर्फ सूर्य की रोशनी में जैसे सोना बन जाती है।
चोपता, जिसे 'मिनी स्विट्ज़रलैंड' कहा जाता है,
वहाँ बैठकर बस एक साँस लेना ही ध्यान बन जाता है।

फूलों की घाटी, जहां रंग बिखरे होते हैं - लाल, नीले, बैंगनी, पीले -
हर रंग आत्मा को सुकून देता है।
यहाँ की सुंदरता सिर्फ आँखों को नहीं,
मन और आत्मा को भी पवित्र करती है।

उत्तराखंड एक ऐसा स्थान है जहाँ
दूर-दूर तक फैली घाटियाँ, शांत झीलें, और ऊँचे देवदार के वृक्ष
आपसे कुछ नहीं कहते - पर फिर भी सब कुछ कह जाते हैं।

यह वह भूमि है जहाँ
ईश्वर को मंदिरों में ढूँढने की आवश्यकता नहीं होती,
क्योंकि हर दिशा, हर ध्वनि, हर क्षण स्वयं एक पूजा बन जाता है।

उत्तराखंड केवल तीर्थयात्रा नहीं है -
यह आध्यात्मिक जागरण है।
यह प्रकृति के स्वरूप में ईश्वर की अनुभूति है।

संस्कृत माँ, हिंदी गृहिणी और अँग्रेजी नौकरानी है - डॉ. फादर कामिल बुल्के

सरकारी दफ्तर का इंटरनेट

अजिंक्य साळवे
लेखापरीक्षक

दफ्तर में बैठा कम्प्यूटर संग
नेट से जुड़ना है रोज जंग
ई-मेल खोलो तो सोचो जरा
कछुआ भी बोले - भाई, मैं तेज चला

फाइल अपलोड ? अरे, मत पूछो हाल
घंटों में होती है केवल टोटल चार केबी ट्रांसफर का कमाल
पास बैठे बाबू जी बोले मुस्कुरा कर
इससे तो चिट्ठी कबूतर पहुँचाए जल्दी जाकर

जूम मीटिंग में दृश्य बड़ा निराला
बॉस का चेहरा जमे जैसे फ्रीज हुआ आला
कैन यू हियर मी वे चिल्लाते हैं बार-बार
और हम कहते - येस सर, पर माइक भी है लाचार

व्हाट्सअप खोलो तो दिल बहलता नहीं
सेंड किया मेसेज तो डिलीवर कल तक भी नहीं
गूगल पर कुछ ढूँढ़ने की कोशिश जो करो
तो स्क्रीन कहे - भैया, चाय पीकर आओ, फिर से ट्राय करो

वाई-फाई का एंटीना घूमे जैसे भूत
कभी पकड़े कभी छोड़े - यही है इसका सच्चा रूप
ऑफिस में एक कोना है बड़ा मशहूर
वही मिलता है नेट - जैसे मंदिर में हुजूर

कभी अचानक स्पीड तेज हो जाती है
सारा स्टाफ ताली बजा, खुश हो जाते हैं
पर पाँच मिनट में फिर वही हाल
नेट कहे - भाई मैं सरकारी हूँ रखें इतना ख्याल

हिंदी संस्कृत की बेटियों में सबसे बड़ी, अच्छी और शिरोमणि है - ग्रियर्सन

पहाड़ों का गीत

श्री अभय भंडारी
लेखापरीक्षक

हरे पेड़ों के बीच,
सूरज की किरणें खेलती हैं,
ठंडी हवा गालों को छूकर
कुछ कह सी जाती हैं।

नदी का मीठा गुनगुनाना,
जैसे कोई पुराना गीत,
पत्थरों पर झरनों की फुहार,
दिल को कर देती है प्रीत।

बादलों की चादर ओढ़े,
पहाड़ मुस्कुराते हैं,
इन ऊँचाइयों की ख़ामोशी में
सपने सज जाते हैं।

पगडंडियों पर चलती राहें,
फूलों से महकती चाहें,
हर मोड़ पर प्रकृति की गोदी,
हर एहसास चमकें जैसे मोती।

चिड़ियों की मीठी तानें,
सुबह-सवेरे जग को जगाएँ,
इन पर्वत की गोदी में रहकर,
दिल बस गीत ही गुनगुनाएँ।

राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की शीघ्र उन्नति के लिए आवश्यक है - महात्मा गाँधी

काश ! मेरे बच्चे भी ऐसे होते

श्री विजय एन कोठारी
प्रधान निदेशक

आज मैं ऑफ़िस से घर पहुँचा तो मेरा उदास चेहरा देखकर श्रीमती जी ने पूछा - "क्या हुआ ? आज आप उदास क्यों लग रहे हैं" ? मैंने कहा कि आज ऑफ़िस में अपने दोस्तों के साथ खाना खा रहा था, तभी हमारे ऑफ़िस के श्रीवास्तव जी मिठाई का डिब्बा लेकर आए। मैंने पूछा - "श्रीवास्तव जी, किस ख़ुशी में मिठाई खिला रहे हैं"? श्रीवास्तव जी बोले - "मेरे बेटे ने सिविल सर्विसेज़ परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है। अब वह अफ़सर बन गया है"।

यह सुनकर एक पल के लिए मैं खुश हुआ । फिर मुझे अपने बेटे कमल का ख्याल आया। उसने भी सिविल सर्विसेज़ परीक्षा दी थी लेकिन पास नहीं हो पाया। दो साल से एक इंजीनियरिंग कंपनी में नौकरी कर रहा है और बार-बार कहता है कि उसे अपना बिज़नेस खोलना है। कहाँ मेरा बेटा और कहाँ श्रीवास्तव जी का । काश ! मेरा बेटा भी श्रीवास्तव जी के बेटे जैसा होता !

यह सुनते ही श्रीमती जी रुआँसी हो गईं। वो बोलीं कि मेरे साथ भी आज ऐसा ही हुआ। सातवें फ्लोर वाली नंदिनी भाभी लिफ़्ट में मिली थीं, बहुत खुश थीं। उनके हाथ में एक बॉक्स था। मैंने पूछा - "क्या बात है नंदिनी जी, आप बहुत खुश दिख रही हैं? इस बॉक्स में क्या है"? वो बोलीं, "इसमें स्वर्ण पदक है। मेरी बेटी ने टेनिस में राष्ट्रीय स्तर का खिताब जीता है"। यह बताते समय उनकी आँखों की चमक चौगुनी हो गई थी। यह सुनकर मैं भी खुश हुई और उन्हें बधाई दी। घर आई तो अपनी ख़ुशी ने दरवाज़ा खोला । उसे देख कर याद आया कि ख़ुशी ने बैडमिंटन में आगे बढ़ने की कोशिश की थी लेकिन राज्य स्तर का भी कोई पदक नहीं जीत पाई थी । अब छोटे बच्चों को बैडमिंटन सिखाती है । काश ! हमारी बेटी भी नंदिनी की बेटी जैसी होती ।

इस तरह की बातें करने के बाद मैं और श्रीमती जी सोने जा रहे थे, तभी बच्चों के कमरे से कुछ आवाज़ें आ रही थीं । हम थोड़ा ठहरे । ध्यान लगा कर बातें सुनी । कमल बोल रहा था - "ख़ुशी, मेरे साथ कॉलेज में नयन श्रीवास्तव था न, उसने सिविल सर्विसेज़ परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है । वह बता रहा था कि उसके माता -पिता ने बचपन से उसे पढ़ाई के लिए प्रोत्साहित किया, उसे अच्छा ट्यूशन मिले, इसके लिए उसके पिता रोज़ एक घंटा साइकिल चलाकर क्लास छोड़ने-लेने जाते थे, उसकी मम्मी रात-रात भर जागती थीं ताकि वो अच्छे से पढ़ाई कर सके । दो बार असफल होने पर भी उसके माता-पिता उसे प्रोत्साहित करते रहे और वो तीसरी बार में सफल हो गया" । यह कहते हुए कमल की आँखों में जैसे किसी टूटे हुए सपने के टुकड़े उभर कर आ गए ।

तभी खुशी बोली - "भैया मैंने भी समाचार-पत्र में पढ़ा कि नंदिनी चाची की बेटी ने टेनिस में स्वर्ण पदक जीता है । मैंने भी बैडमिंटन में सफलता हासिल करने की बहुत कोशिश की थी । पता है, उनकी बेटी जब पाँच साल की थी, तभी नंदिनी चाची ने पहचान लिया था कि उसे टेनिस खेलना अच्छा लगता है । वे उसके लिए टेनिस का खूब सारा समान लातीं । शहर में जो भी टेनिस टूर्नामेंट होता तो उसे वहाँ लेकर जातीं । बड़ी मिन्नतें करके नंदिनी चाची ने अपनी बेटी को शहर की सबसे श्रेष्ठ ऐकेडमी में दाखिला दिलाया । उसके स्कूल में कितने मार्क्स आते हैं, उसकी कभी परवाह नहीं की । आज उनकी बेटी ने नंदिनी चाची का सपना पूरा कर दिया" ।

यह सुनकर मेरे और श्रीमती जी के पैरों तले से ज़मीन खिसक गई । हमने एक-दूसरे की ओर देखा । मुझे याद आया कि किस तरह मैंने कमल को ज़बर्दस्ती सिविल सर्विसेज़ परीक्षा दिलवाई थी । परीक्षा की तैयारी के लिए उसे दिल्ली जाना था तो मैंने यह कहकर मना कर दिया था कि वहाँ खर्च ज़्यादा होगा । वह जब भी कम मार्क्स लाता तो मैं उसे खूब डाँटता था । श्रीमती जी की भी आँखों में अतीत उतर आया कि उन्होंने खुशी को हमेशा यह कहकर हतोत्साहित किया कि स्पोर्ट्स खेलने वाली लड़की की शादी आसानी से नहीं होती । उसे कोचिंग लेनी थी तो कह दिया कि मुझे घर के काम से फ़ुर्सत नहीं है, जबकि श्रीमती जी रोज़ दो घंटे अपनी सहेलियों से कॉलोनी में या मोबाइल पर बातें करती थीं ।

हमें यह अहसास हुआ कि हमने अपने बच्चों को वह प्रोत्साहन, समय और पैसा नहीं दिया जो श्रीवास्तव जी ने और नंदिनी जी ने दिया । कमी हमारे बच्चों में नहीं थी, बल्कि हमारी कोशिशों में थी। कितना आसान था हमारे लिए सारी ज़िम्मेदारी बच्चों पर डालकर स्वयं की कमियों पर पर्दा डालना और यह सोचना कि काश ! हमारे बच्चे भी ऐसे होते। हमारे मन में यह विचार कभी नहीं आया, "काश! हम भी ऐसे माता-पिता होते" ।

हिंदी भाषा और हिंदी साहित्य को सर्वांगसुंदर बनाना हमारा कर्तव्य है - डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

पाँव-पतन (Foot Drop)

(आपबीती घटना पर आधारित इस लेख को लिखने का मुख्य उद्देश्य पाठकों को एक अति गंभीर न्यरोलॉजिकल बीमारी के खतरों से अवगत कराना है जिसकी बहुत चर्चा नहीं होती ।)

श्री अनिल मेनन
व.ले.प.अ.

क्या आपने कभी पाँव-पतन (Foot Drop) नाम की बीमारी का नाम सुना है? सामान्य शब्दों में इसे पैर के अगले हिस्से को उठाने में कठिनाई को कहा जाता है। यह बहुत आसान लगता है। चिकित्सा शब्दावली के अनुसार, पाँव-पतन तंत्रिकाओं (Nerves) को किसी कारण से हुई क्षति के कारण होता है, विशेष रूप से पेरोनियल तंत्रिका को, जो पैर को उठाने वाली मांसपेशियों को नियंत्रित करती है।

सच कहूँ तो, मैंने इस शब्द के बारे में पहले कभी नहीं सुना था। लेकिन जब मैं स्वयं इससे पीड़ित हुआ, तो मुझे इसकी गंभीरता का आभास हुआ। दरअसल, यह पैर की एक नस के दबने से होता है जो पैर उठाने में मदद करने वाली मांसपेशियों को नियंत्रित करती है। इस नस को बारहमासी तंत्रिका (Perennial Nerve) कहते हैं।

आइए, इस बीमारी के लक्षण, कारण एवं उपचार के बारे में जानते हैः-

लक्षण -

पैर की उँगलियों का घिसटना: सबसे ज़्यादा ध्यान देने योग्य लक्षण चलते समय पैर की उँगलियों का ज़मीन पर घिसटना है।

स्टेपेज गैट (Steppage Gait): गिरने की भरपाई के लिए, व्यक्ति अपने घुटने को सामान्य से ज़्यादा ऊँचा उठा सकता है, जिससे ठोकर लगने से बचने के लिए "स्टेपेज गैट" बन जाता है।

कमज़ोरी या लकवा: पैर को उठाने वाली मांसपेशियों में कमज़ोरी या पूरी तरह से लकवा के लक्षण दिखाई देते हैं।

कारण

तंत्रिका क्षति या संपीड़न: सबसे आम कारण पेरोनियल तंत्रिका की क्षति या संपीड़न है, जो घुटने या कूल्हे की चोट के कारण, या कूल्हे या घुटने के प्रतिस्थापन सर्जरी के दौरान हो सकता है।

तंत्रिका मूल की चोट: रीढ़ की हड्डी में एक "दबी हुई तंत्रिका", जो अक्सर स्पाइनल स्टेनोसिस जैसी स्थितियों के कारण होता है, भी पैर के गिरने का कारण बन सकता है।

मस्तिष्क और रीढ़ की हड्डी के विकार: स्ट्रोक, मल्टीपल स्केलेरोसिस, एमियोट्रोफिक लेटरल स्केलेरोसिस (एएलएस), या सेरेब्रल पाल्सी जैसी स्थितियाँ पैर के गिरने का कारण बन सकती हैं।

मांसपेशीय विकार: मांसपेशीय दुर्विकास या मायोसिटिस जैसी बीमारियाँ, जो मांसपेशियों में लगातार कमज़ोरी का कारण बनती हैं, पैर के गिरने का कारण बन सकती हैं।

मधुमेह (डायबिटीज): मधुमेह से पीड़ित लोग तंत्रिका विकारों के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं जो पैर के गिरने का कारण बन सकते हैं।

अन्य कारक: लंबे समय तक उकड़ूँ बैठना या पालथी मारकर बैठना, या प्रसव के दौरान लगी चोटें भी इसके कारण हो सकते हैं।

निदान

एक स्वास्थ्य सेवा प्रदाता शारीरिक परीक्षण के माध्यम से रोगी के पैर के गिरने के कारण का मूल्यांकन करेगा और निम्नलिखित का उपयोग कर सकता है:

इमेजिंग परीक्षण: तंत्रिका या हड्डी की असामान्यताओं की पहचान करने के लिए एक्स-रे, एमआरआई या अल्ट्रासाउंड।

वैकल्पिक नैदानिक अध्ययन: जैसे तंत्रिका चालन अध्ययन और मांसपेशियों के कार्य का आकलन करने के लिए इलेक्ट्रोमायोग्राफी (ईएमजी) तंत्रिका जैसे निदानों का उपयोग ।

उपचार

किसी भी रोग का उपचार अंतर्निहित कारणों के अनुसार किया जाता है और इस रोग के संबंध में भी यह बात लागू है । निम्नलिखित उपचारों में से कोई भी या कई भी शामिल हो सकते हैं:

ब्रेसेज़ या स्प्लिंट्स: एंकल-फुट ऑर्थोसिस (AFO) पैर को सहारा दे सकता है और उसे सामान्य स्थिति में रख सकता है।

भौतिक चिकित्सा (फ़िज़ियोथेरेपी): व्यायाम पैरों की मांसपेशियों को मज़बूत बनाने, गति की सीमा में सुधार लाने और चाल को बेहतर बनाने में मदद कर सकते हैं।

तंत्रिका उत्तेजना: कभी-कभी, प्रभावित तंत्रिका को उत्तेजित करने से मांसपेशियों के कार्य में सुधार हो सकता है।

सर्जरी: नए मामलों में तंत्रिका सर्जरी एक विकल्प हो सकती है, और लंबे समय से चली आ रही पैर की गिरावट को ठीक करने के लिए टेंडन ट्रांसफर सर्जरी पर विचार किया जा सकता है।

अंतर्निहित कारण का इलाज: यदि पाँव-पतन के अन्तर्निहित कारणों का इलाज किया जा सकता है, तो पैर की गिरावट में सुधार हो सकता है या समस्या हल हो सकती है।

यहाँ मुख्य समस्या यह है कि एक बार जब आप पाँव-पतन से प्रभावित हो जाते हैं, तो आप ठीक से चल नहीं पाते और लगभग बिस्तर पर ही पड़े रहते हैं। शुरुआत में, व्यक्ति सोचता है कि यह एक साधारण तंत्रिका मोच है और साधारण मालिश करने से ठीक हो जाएगा । लेकिन साधारण मालिश इस

खतरनाक बीमारी का सही उपचार नहीं है । चिकित्सा-शास्त्र के सर्वमान्य सिद्धांत के अनुसार बीमारी की रोकथाम सदैव उसके इलाज से अधिक श्रेयस्कर होती है । इस बीमारी से बचने के लिए नियमित रूप से उचित व्यायाम बहुत ज़रूरी है जिससे मांसपेशियों की मजबूती बढ़े ।

सबसे ज़रूरी बात यह है कि आपको तुरंत दवा शुरू करनी होगी, क्योंकि यह कोई शारीरिक अथवा फिजियोलॉजिकल समस्या नहीं, बल्कि एक गंभीर न्यूरोलॉजिकल समस्या है । एक सुबह, मुझे अचानक ऐसा लगा कि मैं अपने दाहिने पैर को हिला नहीं पा रहा था । जब पाँव पर ही नियंत्रण नहीं रहा तो बिस्तर पर पड़े रहने के अतिरिक्त कोई चारा भी न था । मेरी समस्या यह थी कि केवल दाहिना पैर ही प्रभावित था, हालाँकि मैं संवेदना महसूस कर सकता था, लेकिन दाहिने पैर की उँगलियाँ नहीं हिला सकता था और न ही अपना पैर खुद उठा सकता था । सुकून की बात थी कि मेरा बायाँ पैर प्रभावित नहीं हुआ था । समय पर उचित दवा और देखभाल न करने से अप्रभावित पैर भी प्रभावित हो सकता है, जिससे और भी जटिलताएँ पैदा हो सकती हैं । अन्य ज्ञात स्वास्थ्य समस्याओं की तरह इसके कोई संकेतक या लक्षण नहीं हैं।

एमआरआई रिपोर्ट के आधार पर मुझे अस्पताल में भर्ती होना पड़ा, सभी ज़रूरी जाँचें करवानी पड़ीं और उचित मार्गदर्शन में भौतिक चिकित्सा (फिजियोथेरेपी) शुरू करनी पड़ी । इसके बाद भी मुझे इक्कीस दिनों तक अस्पताल में रहना पड़ा । हालाँकि तब भी मैं ठीक से चल नहीं पा रहा था, फिर भी मुझे छुट्टी मिल गई । अब मैं घर पर नियमित रूप से भौतिक चिकित्सा के अधीन हूँ । इसका बड़ा लाभ यह हुआ है कि अब मैं धीरे-धीरे अपना पैर हिला पा रहा हूँ।

भारत की एकता और एकजुटता को बढ़ावा देने का एक सशक्त माध्यम हिंदी है।

- इंदिरा गाँधी

कारगिल योद्धा

सुश्री मोनाली फड़तरे
निदेशक (प्रशासन)

एक बार एक रेलयात्रा के क्रम में मेरी मुलाक़ात शहीद कर्नल आर विश्वनाथन के पिता श्री वी. रामकृष्णन से हुई, जिन्होंने मुझे एक शहीद सैनिक के पिता होने के अपने अनुभव सुनाए। यह मेरी अब तक सुनी सबसे दिलचस्प और बहादुरी भरी कहानियों में से एक थी।

देशव्यापी वेदना की रेखाएँ

श्री वी. रामकृष्णन कह रहे थे - "उन्होंने फिर से ऐसा ही किया। जी हाँ, उन्होंने फिर से अपना पराक्रम दिखा दिया । उन्होंने दिखा दिया कि जहाँ सारी संभावनाएँ समाप्त हो जाती हैं, वहाँ से हमारे जाँबाज सैनिकों के शौर्य का प्रदर्शन शुरु होता है । दुश्मन ने कश्मीर में स्थित कारगिल की चोटियों पर चोरी-छिपे कब्जा कर लिया था । देश की अखंडता की बात थी । हमारे सैनिक दुश्मन के आक्रमण से हमारे कश्मीर की रक्षा के लिए उठ खड़े हुए । अपने शौर्य से उन्होंने दुश्मन को रौंद डाला । हमारे कई रण-बाँकुरों ने कट्टरपंथ के नापाक इरादों से कश्मीर की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी । हमारे रक्षा बलों के वीरों ने कारगिल सेक्टर में कट्टरपंथियों से लोहा लिया और देश की एक इंच ज़मीन पर भी कब्ज़ा नहीं होने दिया । उन्होंने कट्टरपंथियों को खदेड़ दिया और अपने मिशन में कामयाब रहे।

इन सबके बीच केरल के एक सुदूर कस्बे में भाग्य की क्रूरता ने दस्तक दी ।

कर्नल आर विश्वनाथन

कारगिल युद्ध में देश का एक और बेटा शहीद हो गया था जिनका नाम था लेफ्टिनेंट कर्नल (मरणोपरांत कर्नल) आर विश्वनाथन । अपने बेटे को खोने के दुःख के बावजूद कर्नल विश्वनाथन के पिता के चेहरे से साहस झलक रहा था । एक पिता के रूप में वे भले ही दुखी थे, पर एक भारतीय के नाते अपने पुत्र की जाँबाजी और शहादत पर 60 वर्षीय पिता गौरवान्वित थे । श्री वी रामकृष्णन ने कहा कि मेरे बेटे ने अपना जीवन राष्ट्र को समर्पित कर दिया है।

उस दिन कर्नल विश्वनाथन एक मिशन का नेतृत्व कर रहे थे । उनके तीन सैनिक तोलोलिंग पर्वत श्रृंखला की तेज़ हवाओं वाली ढलानों पर मृत पड़े थे जिन्हें नीचे उतारना था । एक बहादुर अधिकारी के लिए कम से कम इतना तो करना ही था । 2 जून की रात को अपने सैनिकों का नेतृत्व करते हुए, विश्वनाथन दुश्मन की भारी गोलाबारी के बीच पेट के बल रेंगते हुए पर्वत श्रृंखला पर चढ़े । वही पुरानी कहानी : घुसपैठिए ऊपर थे, बंकरों में अच्छी तरह छिपे हुए थे और उनकी लाइट मशीन गन रात के सन्नाटे में आग उगल रही थीं । कर्नल विश्वनाथन ने तीन बंकरों पर कब्ज़ा कर लिया, लेकिन उनकी कमर और जांघ में गोली लग गई । प्राथमिक उपचार से कोई फायदा नहीं हो रहा था । उनके सैनिक

उन्हें वापस द्रास ले जाने की कोशिश कर रहे थे, ... इसी कोशिश के क्रम में काल की क्रूरता प्रकट हो गई। देश का एक जाँबाज बेटे ने मातृभूमि की रक्षा करते-करते अपना सर्वोच्च बलिदान दे दिया ।

"मैं एक अज्ञात स्थान की ओर जा रहा हूँ । यह खतरनाक हो सकता है।" 2 जून को ही ये पंक्तियाँ कर्नल ने अपनी पत्नी जलजा को भेजे जानेवाले पत्र में लिखी थी । लेकिन उसे पोस्ट नहीं किया था ।

3 जून की दोपहर को कोच्चि में विश्वनाथन के पिता श्री वी. रामकृष्णन के घर पर फ़ोन की घंटी बजी । रामकृष्णन याद करते हैं - "मुझे बताया गया कि मेरा बेटा अब नहीं रहा ।" कर्नल विश्वनाथन का गोलियों से छलनी शव उनके घर कोच्चि पहुँचा । जलजा को उसके पति के शव के साथ ही वह पत्र भी सौंप दिया गया जिसे कर्नल विश्वनाथन ने 2 जून को मिशन पर जाते समय लिखा था।

कर्नल विश्वनाथन की शहादत के समाचार ने पूरे परिवार की ज़िंदगी बदल दी । जलजा आज तक उन सैकड़ों शुभचिंतकों से मिलने से इन्कार कर देती हैं जो संवेदना व्यक्त करने आते हैं । दूसरी ओर, श्री वी रामकृष्णन आगंतुकों को अपने बेटे के जीवन के बारे में विस्तार से बताते हैं। कर्नल विश्वनाथन की बेटी अंजलि भी कभी-कभी अपने दादाजी की मदद करती है।

जैसे ही रामकृष्णन प्यार से एक वर्दी निकालते हैं, उनकी पत्नी कमल पूछ वर्दी है जो विश्वनाथन ने अंतिम दिन पहनी थी ? "नहीं, नहीं, मैंने तुम्हें कितनी बार कहा है कि उस वर्दी में गोलियों के निशान हैं। यह दूसरी वर्दी है,"। शहीद के पिता बड़े ही गर्व से कहते हैं।

अंत में मैं यही कहूँगी कि - "शहीदों ने अपने परिवारों से वादा किया था कि वे जल्द ही वापस आएँगे । उन्होंने अपना वादा निभाया भी । वे एक सामान्य मनुष्य बनकर गए थे । लेकिन हीरो बनकर लौटे, ताबूतों में, तिरंगे में लिपटकर"।

याद रखें मित्रों, "उन्होंने हमारे कल के लिए अपने आज का बलिदान दे दिया ।" अंत में मैं यह कहकर अपनी बात समाप्त करना चाहूँगी कि फिल्मी नायक आते हैं और चले जाते हैं लेकिन हमारे देश के सैनिक जो असली नायक हैं, हमेशा अमर रहते हैं ।

भाषा व्याकरण और भाषाशास्त्र से कहीं अधिक महान है - जवाहरलाल नेहरू

छुन्नू

सुश्री पूजा चौधरी
कनिष्ठ अनुवादक

भारत सरकार की सेवा में कनिष्ठ अनुवादक के रूप में मेरा पदस्थापन मुंबई में हुआ । मुंबई एक ऐसा महानगर है जिसके बारे में एक औसत व्यक्ति भी कुछ न कुछ जानता ही है, जैसै यह मायानगरी है, यह भारत की वित्तीय राजधानी है, यह महाराष्ट्र राज्य की राजधानी है वगैरह वगैरह । इतनी बातें मैंने भी सुन रखी थीं । लेकिन मैं भी किसी ऐरे-गैरे महानगर से नहीं आती। मैं कोलकाता से आती हूँ जो स्वयं ही एक महानगर है और भारत का पहला महानगर है । इसलिए मुंबई ऑफिस मिलने पर मेरे मन में न कोई बहुत अधिक उत्साह था और न ही कोई क्षोभ ।

मुंबई आने पर मुझे एक नई बात मालूम हुई । मुंबई में रहने के लिए यदि कोई अच्छी जगह मिल जाए तो व्यक्ति भाग्यशाली होता है । मैं उतनी भाग्यशाली नहीं थी । दो-तीन निवास बदलने के बाद मुझे अंततः एक वीमेन्स हॉस्टल में जगह मिली जो कार्यालय से काफी निकट है । मुंबई में आना-जाना एक विकराल समस्या है । मुझे खुशी हुई कि चलो, कम से कम इस समस्या से निजात तो मिली। लेकिन निवास मिलने की मेरी खुशी दोगुनी हो गई जब मैंने हॉस्टल में कई बिल्लियों को देखा । न जाने क्यों, बिल्लियों पर मुझे बहुत प्यार आता है । एक दिन एक छोटी सी बिल्ली दिखी, बहुत ही प्यारी और मासूम। वह शायद अपने माँ से बिछुड़ गई थी और इधर-उधर भटक रही थी । मैं स्वभाव से पशु-प्रेमी हूँ। मुझे सभी पशुओं से लगाव है किन्तु बिल्लियो की तो बात ही कुछ और है । मुझे उस मासूम पर दया आ गई । मैंने तुरन्त उसके लिए कुछ खाने की व्यवस्था की । वह जल्दी-जल्दी उसे खाने लगी । मैंने प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरा तो वह मेरे पैरों पर सोने लगी । ऐसा लग रहा था जैसे उसका मन शान्त हो गया हो । फिर यह सिलसिला चलता रहा और मैं रोज उसको खाना देने लगी और हमारी दोस्ती घनिष्ठ से घनिष्ठतर होती गई । धीरे-धीरे वह मेरे कमरे तक आने लगी । जब भी मैं ऑफिस से हॉस्टल जाती, वह मेरे पास आ जाती और खेलने लगती जैसे मेरा स्वागत कर रही हो । मैं भी उसके सिर पर हाथ फेरती और उसके साथ खेलने लग जाती जिससे मेरी दिन भर की थकान मिट जाती और मन आनन्दमय हो जाता । एक दिन अचानक ही उसे देखकर मेरे मुँह से 'छुन्नू' शब्द निकल गया और तब से उसका नाम 'छुन्नू' हो गया ।

मेरा प्रिय छुन्नू : जिज्ञासु मुद्रा में

बिल्लियाँ कभी-कभी कई कारणों से अपने परिचितों और दूसरी बिल्लियों को सिर से टक्कर मारती हैं या उन्हें सिर से मारती हैं। ज़्यादातर, यह सिर्फ़ स्नेह का संकेत होता है। बिल्ली अपने मित्र को यह दिखाने की कोशिश करती है कि वह उनसे प्यार करती है, इसके लिए वह अपना चेहरा उनके चेहरे पर रगड़ती है और अपनी कुछ गंध उन पर डालती है। बिल्लियों का पूँछ खड़ी करके हिलाना एक रहस्य है जो कई बार उलझन में डाल सकता है । पूँछ के हिलने को शरीर की भाषा की तरह एक छोटा-सा संवाद समझना सबसे अच्छा है।

जब बिल्लियाँ धीमी गति से हिलती हैं, तो उनकी पूँछ कई भावनाओं का संकेत दे सकती है, जिनमें खुशी या चंचलता शामिल है। पूँछ हिलाने का मतलब है कि आपकी बिल्ली किसी काम में सक्रिय रूप से व्यस्त है, जैसे अपने परिवेश को देखना या किसी चीज़ पर ध्यान केंद्रित करने की कोशिश करना।

बिल्लियों में पूँछ हिलाना उत्साह या सतर्कता का भी संकेत देता है और यह दूसरी बिल्लियों के साथ संवाद करने का एक प्रयास भी हो सकता है। इस प्रकार का व्यवहार आमतौर पर मैत्रीपूर्ण भावनाओं का संकेत देता है। यदि आपकी बिल्ली सामान्य से अधिक हिलती है, तो इसका मतलब हो सकता है कि वह अपने परिवेश में किसी चीज़ से डरी हुई या ख़तरे में है और उसे सुरक्षा के लिए आपकी मदद की ज़रूरत है।

छुन्नू के साथ रहकर मैंने महसूस किया है कि जानवर बहुत ही मासूम और विश्वसनीय होते हैं। छुन्नू इतनी अधिक प्यारी है कि अब मुझे स्वयं से अधिक उसकी चिंता रहती है । विशेषकर जब मैं ऑफिस में होती हूँ तब सोचती रहती हूँ कि अभी छुन्नू क्या कर रही होगी ? छुन्नू को किसी ने मारा-पीटा तो नहीं ? उसे किसी ने फटकारकर भगा तो नहीं दिया ? इस तरह के कई प्रश्न मेरे मन में घूमते रहते हैं, जब कभी मैं उससे दूर रहती हूँ । इसलिए ऑफिस से हॉस्टल पहुँचते ही मैं छुन्नू को खोजती हूँ। लेकिन छुन्नू मुझे खोजने का अवसर नहीं देती है । मेरी आवाज सुनकर ही मेरे पास आ जाती है । फिर अपनी पूँछ उठाकर मेरे पैरों को रगड़ने लगती है । उसी समय उसे मैं कुछ खिला देती हूँ । फिर छुन्नू मेरे साथ-साथ ही मेरे कमरे तक आ जाती है । कमरे में आते ही उसकी शरारतें शुरु हो जाती हैं । कभी-कभी तो मुझे ऐसा भी लगने लगता है कि मेरे कमरे की असली मालकिन छुन्नू ही है ।

अगर उनसे प्यार किया जाए तो पशु मानव से ज्यादा विश्वसनीय होते हैं । ये आपके खालीपन को दूर कर आपको खुशियाँ देते हैं ।कभी अगर आपका मन परेशान हो तो आप इनके साथ थोड़ा समय बिताएँ । निश्चित ही आप थोड़ी देर के लिए ही सही, पर अवसादमुक्त हो जाएँगे और सकारात्मक उर्जा से भर जाएँगे ।

विपश्यना

श्री प्रदीप बाळू जाधव
बहुकार्य कार्मिक

भारत की भूमि रहस्य और अनेक प्रकार की साधना की भूमि है । यहाँ अनेक ऋषि मुनियों ने तपस्या की है । साधु संतों ने गहन ध्यान आत्मचिंतन ओर भक्ति द्वारा स्वयं की खोज की है । इसी श्रृंखला में विपश्यना एक विशेष ध्यान-पद्धति है जिससे मन को शांति मिलती है, कई तरह की शारीरिक व्याधियों में आराम मिलता है । विपश्यना ध्यान की एक विधि है जिसका अर्थ है "जैसा है वैसा देखना" । यह आत्म-शुद्धि की एक प्राचीन ध्यान-विधि है जो मन और शरीर के परिवर्तनशील स्वभाव का अनुभव करने पर केंद्रित है ।

ध्यान की इस विधि को भारत में सभ्यता के प्रारंभ से ही अभ्यास में लाया जाता रहा है । बाद में धीरे-धीरे इसकी लोकप्रियता नेपथ्य में चली गई । इस सार्वभौमिक विधि को महात्मा बुद्ध ने पुनः लोकप्रिय बनाया था । आधुनिक काल में श्री एस.एन. गोयनका ने इस प्राचीन कला को पुनः लोकप्रिय बनाया और इसे सभी के लिए उपलब्ध कराया । सबसे बड़ी बात यह है कि इस विधि का किसी धर्म अथवा संप्रदाय से कोई संबंध नहीं है, अर्थात् यह सार्वभौमिक है और सबके लिए है । यह ध्यान अपने नैसर्गिक श्वसन के अवलोकन से शुरू होता है, जिसके बाद शरीर की विभिन्न संवेदनाओं का साक्षी भाव से निरीक्षण किया जाता है, जिससे व्यक्ति नश्वरता, दुख और स्वयं के अहं भाव को समझकर साधक अपनी मानसिक अशुद्धियों से मुक्त होता है ।

विपश्यना के मुख्य सिद्धांत:

पंचशील का पालन: विपश्यना का अभ्यास करने के लिए पंचशील का पालन करना आवश्यक है:

(1) जीव हिंसा न करना
(2) चोरी न करना
(3) ब्रह्मचर्य का पालन करना (किसी भी तरह की तृष्णा, लोभ, आदि से दूर रहना)
(4) मिथ्या भाषण से विरत रहना (झूठ, चुगली, निंदा)
(5) सभी प्रकार के नशे से दूर रहना

विपश्यना की प्रक्रिया

(1) प्रारंभिक चरण:- साधक अपने नैसर्गिक श्वास पर ध्यान केंद्रित करके मन को एकाग्र करते हैं ।

(2) शारीरिक संवेदनाओं का अवलोकन:- इसके बाद, ध्यान को शरीर के विभिन्न हिस्सों पर ले जाया जाता है, जहाँ विभिन्न प्रकार की शारीरिक संवेदनाओं को साक्षी भाव से अनुभव किया जाता है । इसमें खुजली, दर्द या कंपन जैसी अनुभूतियाँ शामिल हो सकती हैं ।

(3) निर्णय रहित अवलोकन:- इस प्रक्रिया के दौरान किसी भी अनुभूति का विरोध या उसे बदलने की कोशिश नहीं की जाती, बल्कि उसे जैसा है वैसा स्वीकार किया जाता है ।

(4) आत्म-शुद्धि:- शरीर और मन की इन संवेदनाओं का अवलोकन करने से विकारों को समझा जाता है और मानसिक अशुद्धियाँ दूर होती हैं ।

देश के प्रत्येक क्षेत्र में विपश्यना के शिविर चलाए जाते हैं । विपश्यना शिविरों की सदस्यता और विपश्यना के अभ्यास में भाग लेना पूरी तरह से निःशुल्क होता है। शिविर के व्यवस्थापक ही भागीदारों के खाने-पीने, रहने, खूबसूरत माहौल, शिक्षाओं आदि पर होनेवाले व्यय की व्यवस्था करते हैं । यहाँ तक कि कुछ जगहों पर तो शिविर तक आने-जाने के लिए भी कोई शुल्क नहीं देना पड़ता। विपश्यना के सबसे प्रारंभिक चरण के रूप में दस दिनों के एक प्रशिक्षण में भाग लेना पड़ता है । प्रत्येक दिन की प्रगति शाम को एक घंटे के प्रवचन में समझाई जाती है। अंत में, अंतिम पूर्ण दिवस पर, प्रतिभागी सभी के प्रति प्रेमपूर्ण दया या सद्भावना का ध्यान सीखते हैं, जिसमें पाठ्यक्रम के दौरान विकसित पवित्रता को सभी प्राणियों के साथ साझा किया जाता है। यह संपूर्ण अभ्यास वास्तव में एक मानसिक प्रशिक्षण है।

विपश्यना को "चमत्कारों" के बजाय लाभों और सकारात्मक परिवर्तनों के रूप में देखा जाना चाहिए, जैसे तनाव और चिंता में कमी, बेहतर एकाग्रता, आत्म-नियंत्रण में वृद्धि, शारीरिक स्वास्थ्य में सुधार और मानसिक स्पष्टता। यह मन को शांत करने, विचारों और भावनाओं के प्रति अधिक जागरूक होने और दुनिया को शांति से देखने की एक प्राचीन तकनीक है, जिसके लंबे समय तक अभ्यास से वास्तविक सुख प्राप्त होता है।

विपश्यना के लाभ

(1) मानसिक शांति:- मन की शांति प्राप्त होती है और एक खुशहाल जीवन जीने में मदद मिलती है ।
(2) वास्तविकता को समझना:- वास्तविकता को उसके सही स्वरूप में समझने की क्षमता बढ़ती है ।
(3) दुखों से मुक्ति:- दुख पैदा करने वाली प्रकृति को समझने से व्यक्ति दुखों से मुक्त होने लगता है ।
(4) संतुलित मन:- एक प्रेम और करुणा से भरा संतुलित मन विकसित होता है ।
(5) तनाव में कमी:- तनाव और चिंता कम करने में भी यह प्रभावी है ।

यह एक सार्वभौमिक उपाय है जो किसी भी धर्म या संप्रदाय से संबंधित नहीं है, और हर कोई इसका अभ्यास कर सकता है ।

राष्ट्रीय एकता की कड़ी हिंदी ही जोड़ सकती है - बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

विश्वकर्मा की ईमानदारी

श्री प्रवीण नाफड़े
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

एक बढ़ई किसी गाँव में काम करने गया । लेकिन वह अपना हथौड़ा साथ ले जाना भूल गया । उसने गाँव के लोहार के पास जाकर कहा- मेरे लिए एक अच्छा सा हथौड़ा बना दो । मेरा हथौड़ा घर पर ही छूट गया है । लोहार ने कहा - बना दूँगा पर तुम्हें दो दिन इंतजार करना पड़ेगा । हथौड़े के लिए मुझे अच्छा लोहा चाहिए । वह कल मिलेगा ।

दो दिनों में लोहार ने बढ़ई को हथौड़ा बना कर दे दिया । हथौड़ा सचमुच अच्छा था । बढ़ई को उससे काम करने में काफी सहूलियत महसूस हुई । बढ़ई की सिफारिश पर एक दिन एक ठेकेदार लोहार के पास पहुँचा।

उसने हथौड़ों का बड़ा ऑर्डर देते हुए कहा कि पहले बनाए हथौड़ों से अच्छा बनाना । लोहार बोला - उनसे अच्छा नहीं बन सकता । जब मैं कोई चीज बनाता हूँ तो उसमें अपनी तरफ से कोई कमी नहीं रखता, चाहे कोई भी बनवाए ।

धीरे-धीरे लोहार की शोहरत चारों तरफ फैल गई । एक दिन शहर से एक बड़ा व्यापारी आया और लोहार से बोला - मैं तुम्हें डेढ़ गुणा अधिक दाम दूँगा । शर्त यह होगी कि भविष्य में तुम सारे हथौड़े केवल मेरे लिए ही बनाओगे । हथौड़ा बनाकर दूसरों को नहीं बेचोगे ।

लोहार ने इंकार कर दिया और कहा - मुझे अपने इसी दाम में पूर्ण संतुष्टि है । अपनी मेहनत का मूल्य मैं खुद निर्धारित करना चाहता हूँ । अपने फायदे के लिए मैं किसी दूसरे के शोषण का माध्यम नहीं बन सकता । आप मुझे जितने अधिक पैसे देंगे, उसका दोगुणा गरीब खरीददारों से वसूलेंगे। मेरे लालच का बोझ गरीबों पर पड़ेगा, जबकि मैं चाहता हूँ कि उन्हें मेरे कौशल का लाभ मिले। मैं आपका प्रस्ताव स्वीकार नहीं कर सकता ।

सेठ समझ गया कि सच्चाई और ईमानदारी महान शक्तियाँ हैं । जिस व्यक्ति में ये दोनों शक्तियाँ मौजूद हैं उसे किसी प्रकार का प्रलोभन अपने सिद्धांतों से नहीं डिगा सकता ।

बचपन

सुश्री शिवानी
स.ले.प.अ.

बचपन और बचपना ! कई लोग इन दोनों को पर्यायवाची समझ लेते हैं । लेकिन वास्तव में ये दोनों दो चीजें हैं । बचपन आयु का एक विशेष कालखंड होता है । बचपना उस विशेष कालखंड के बच्चों के हाव-भाव, हरकतें, शरारतें आदि को कहते हैं । यह बचपना ही है जो बचपन को जीवन का स्वर्णिम काल बनाता है । यह बचपना बिल्कुल मासूम और पवित्र होता है । शायद इसीलिए कहा जाता है कि बच्चों में ईश्वर का निवास होता है । मशहूर शायर निदा फाजली का एक प्रसिद्ध शेर है-

घर से मस्जिद है बहुत दूर, चलो यूँ कर लें / किसी रोते हुए बच्चे को हँसाया जाए

सचमुच, किसी बच्चे को हँसाने या खुश करने के बढ़कर अच्छा काम दुनिया में कुछ भी नहीं है । जो व्यक्ति समझदार होते हैं, वे अपनी बचपना को बचपन के बाद भी संभालकर रखते हैं । यह बचपना उन्हें जीवन से कभी ऊबने नहीं देता, सदैव ऊर्जित करता रहता है ।

बचपन हम सभी की जिंदगी का वो अनमौल दौर है जो शरारतों और बेफिक्री से भरा होता है। जहाँ न बीते कल की फिक्र थी और न आने वाले कल की चिंता। बस थी तो केवल आज को जीने की चाहत। यह ऐसा समय है जो हमारे हृदय में स्वर्णिम अक्षरों में लिखा हुआ है। आज भी जब हम उन दिनों को याद करते हैं तो एक मीठी सी मुस्कान चेहरे पर आ जाती है।

वह स्कूल से आते ही बस्ता फेंककर खेलने भागना और दोस्तों के साथ घंटो बिताना। न धूप की परवाह, न थकान का एहसास। वो गुड़ियो के साथ खेलना, छुपन-छुपाई के खेल, दौर लगाना हो या हर शनिवार- रविवार टीवी पर कार्टून देखना। हर खेल का रोमांच ही अलग होता है। अगर कोई दोस्त कभी किसी खेल में हार जाए तो सबका उसे मिलकर चिढ़ाना और फिर अगले ही पल एक हो जाना। ये सब वो छोटी-छोटी खुशियाँ जो आज भी हृदय में ताजा है।

खुशियाँ उस समय बहुत सरल थी। एक आईसक्रीम, नई पुस्तकों की महक, बारिश में भीगने की आजादी, गुड़ियों के कपड़े बनवाना, छोटे-छोटे मिट्टी के बर्तनो से खेलना, ये सब वो पल है, जिन्हें हम पैसे से नहीं खरीद सकते।

गर्मी की छुट्टियों का इंतजार तो ऐसे होता था मानो कोई त्योहार हो, नाना-नानी के घर जाना हो या फिर रात में छत पर चाँद-तारें निहारते हुए सो जाना। ये सब आज भी मन को सुकून दे जाते हैं।

आज जब बड़े हो गए हैं, तो वे दिन और भी याद आते हैं, आज हमारे पास सारी सुख-सुविधाएँ है पर मानो वह सुकून और निश्चिंतता कहीं खो सी गई है। आज जब कभी जिंदगी की दौर में थक जाते हैं तो बचपन की मीठी यादें चेहरे पर मुस्कान ले आती है।

इसलिए जरुरी है कि हम अपने भीतर की उस मासूमियत को मरने न दें । हमारे भीतर बचपना जिंदा रहना चाहिए। वह बचपना:-

- जो चीजों को सरलता से देख सकें।
- जो बिना वजह मुस्कुरा सके ।
- जो गिरकर फिर से उठना सिखा दे ।
- जो हर रिश्ते को बिना शर्त के निभा सके।

समस्त भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक हो तो वह देवनागरी ही हो सकती है।

- (जस्टिस) कृष्णस्वामी अय्यर

मेरी अविस्मरणीय ट्रेकिंग

श्रीमती वीणा शिरशाट
पर्यवेक्षक

सावन की शुरुआत थी । चारों ओर का वातावरण हरियाली से परिपूर्ण था । वर्षा की हल्की-हल्की बूँदें-फुहारें मन को उल्लसित कर रही थीं। शौकीन लोग इसी सुखमय वातावरण में ट्रेकिंग की योजना बनाते हैं । ट्रेकिंग मुझे भी काफी आकर्षित करता था, किन्तु अनुभव नहीं था । मन में विचार आया कि क्यों न ट्रेकिंग का भी अनुभव ले ही लिया जाए । परिवार में इस पर विचार हुआ और सबने मिलकर निश्चय किया कि भीमाशंकर चला जाए ।

मुंबई से भीमाशंकर पहुँचने के दो रास्ते हैं – एक था सीढ़ी घाट जो बहुत कठिन और डरावना था और दूसरा है गणेश घाट जो सीधा, सटीक तो था लेकिन काफी लम्बा था । तय हुआ कि यदि ट्रेकिंग का अनुभव लेना है तो क्यों न सीढ़ी घाट का रास्ता चुना जाए ।

सुबह ट्रेन से कर्जत के लिए हम सभी निकल पड़े । कर्जत स्टेशन मुंबई-पुणे रेलमार्ग पर अवस्थित है जो कल्याण स्टेशन से लगभग तीस किलोमीटर दूर है । वहाँ से एसटी की बस से खांडस पहुँचे । खांडस से जंगल की तरफ चलना था । हमलोगों को ट्रेकिंग का कोई अनुभव नहीं था । इस अनुभवहीनता के कारण एक बड़ी गलती हो गई । अमूमन ट्रेकिंग पर जानेवाले कम से कम सामान लेकर जाते हैं । हमलोग पिकनिक जैसा सामान लेकर चले गए थे । वर्षा लगातार हो रही थी । सामान अधिक होने के कारण चलने में दिक्कत हो रही थी । लगातार वर्षा और ऊँचा जंगली इलाका होने के कारण कुहरा छाया हुआ था । सामने कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था । हमलोग बड़ी सावधानी से धीरे-धीरे चल रहे थे । वर्षा की तीव्रता बढ़ गई । अँधेरा भी छाने लगा । अब धीरे-धीरे डर जैसा लगने लगा था । हमलोग घने जंगल में थे । आसपास किसी की कोई चहल-पहल नहीं थी । अभी आगे बहुत लम्बा रास्ता तय करना बाकी था ।

थोड़ी दूर चलने के बाद हनुमान जी का एक मंदिर दृष्टिगोचर हुआ । लगातार चलने के कारण थकान भी हो रही थी । हमलोगों ने थोड़े समय के लिए विश्राम करने का निश्चय किया । घने जंगल के बीचोंबीच वह मंदिर था । लम्बी दाढ़ियोंवाले एक साधु अत्यंत गंभीर मुद्रा में वहाँ विराजमान थे । एक तेल का दिया टिमटिमा रहा था । कुल मिलाकर वातावरण नीरव था । वहाँ की शांति एक तरह का आध्यात्मिक वातावरण का निर्माण कर रही थी । ऐसा लग रहा था मानों साक्षात भगवान शिव यहाँ समाधिस्थ हों । हमलोग मंदिर में कुछ देर के विश्राम के बाद पुनः अपनी यात्रा पर निकल गए । अँधेरा घना से घना होता जा रहा था । आशंका थी कि अपने गंतव्य तक हमलोग पहुँच भी पाएँगे अथवा नहीं। अभी तो सीढ़ी घाट पार करना बाकी ही था । रास्ते में चढ़ाई के दौरान दो जगहों पर सीढ़ियाँ लगी हैं । एक तरफ गहरी खाई और दूसरी तरफ चढ़ाई । अगर गलती से भी पैर फिसल गया तो सीधे खाई में गिरना तय था । खाई इतनी गहरी कि गिरने के बाद हड्डी भी संभवतः सही-सलामत नहीं मिलती ।

हमलोग सीढ़ी घाट की तरफ बढ़े । हमें अपने निर्णय पर कोफ्त होने लगी थी कि क्यों इतना कठिन रास्ता चुना । न तो हमें ट्रेकिंग के बारे में कुछ पता था और न ही रास्ते के बारे में पूरी जानकारी ही थी । आधी दूरी तक जाकर वापस मुड़ना भी तो संभव नहीं था । हमलोगों नें जान हथेली पर लेकर कठिन सीढ़ी घाट को भी पार कर लिया । पीछे मुड़कर जब खाई की तरफ देखा तो रोंगटे खड़े हो गए । कठिनाइयों का सिलसिला जारी था । लगातार वर्षा के कारण कीचड़ ही कीचड़ था जिसमें से रास्ता निकालना था । लगभग दो से तीन किलोमीटर का रास्ता कीचड़ों को चीरते हुए पार करना पड़ा । उसके बाद हमलोग भीमाशंकर की ओर चल दिए । भीमाशंकर पहुँचने के बाद वहाँ के लोगों ने बताया कि जिस रास्ते से हमलोग गए थे वह बहुत ही खतरनाक था । वह रास्ता अजगर जैसे साँप और जंगली जानवरों के इलाके से गुजरता है । हमलोगों ने मन ही मन भीमाशंकर जी का धन्यावद किया कि उन्होंने आज हमलोगों को बचा लिया ।

हमलोगों को जीवन की एक बड़ी सीख मिल गई थी कि पूरी जानकारी लिए बिना किसी जगह की ओर नहीं जाना चाहिए । उसके बाद मैंने ट्रेकिंग के प्रति हाथ जोड़ लिए । यह मेरे जीवन की अंतिम ट्रेकिंग थी ।

मैं दुनिया की सब भाषाओं की इज्जत करता हूँ । पर मेरे ही देश में हिंदी की इज्जत न हो, यह मैं सहन नहीं कर सकता - आचार्य विनोबा भावे

सरकारी कम्प्यूटर का धीमापन : एक आध्यात्मिक अनुभव

श्री सचिन पन्नू
लेखापरीक्षक

सरकारी कार्यालयों में अगर किसी चीज का सबसे ज्यादा आदर होता है वह है – कम्प्यूटर का धीमापन ! जी हाँ, कम्प्यूटर जी से भी अधिक आदर उनका धीमापन पाता है । यह कोई आम तकनीकी समस्या नहीं है, बल्कि एक संस्कृति, एक संस्कार और कहीं न कहीं एक धार्मिक अनुभव भी है ।

जब आप सुबह ऑफिस आते हैं और कम्प्यूटर को स्विच ऑन करते हैं, तो ऐसा लगता है मानों किसी ध्यानमग्न योगी को समाधि से जगाने की कोशिश कर रहे हों । बटन दबाओ और स्वयं ध्यान में बैठ जाओ । मॉनिटर की स्क्रीन पर घूमता हुआ सर्कल (Loading) दरअसल आपको जीवन का सच्चा धैर्य सिखाता है ।

पवित्र बूटिंग प्रक्रिया

सरकारी कम्प्यूटर की बूटिंग प्रक्रिया एक यज्ञ से कम नहीं । सबसे पहले CPU को ऑन करें, फिर मॉनिटर को । अब "Windows is starting"..... देखिए और चाय बनाइए । चाय खत्म होने के बाद भी अगर स्क्रीन न खुले तो समझ जाइए – कम्प्यूटर तपस्या में लीन है । कभी-कभी तो इतना अधिक लीन हो जाता है कि आम यूजर्स को लगने लगता है कि अब यह ब्रह्मा जी से अमरता का वरदान लेकर ही मानेगा । किसी तपोलीन को डिस्टर्ब करना पाप से कम नहीं । अतः आप और मैं, कोई भी तपस्या में लीन कम्प्यूटर का तप-भंग कराने का जोखिम न लें । हो सके तो एक बार फिर से चाय बनाने के संवैधानिक काम में स्वयं को व्यस्त कर लें ।

फाइल खोलना – भाग्य पर निर्भर

अगर आपने गलती से कोई भारी फाइल खोल दी जैसे Excel शीट जिसमें 1000 से ज्यादा Rows हों तो अपने भाग्य और सरकारी कम्प्यूटर की करुणा पर भरोसा करना होगा । फाइल खुलेगी या नहीं – यह निर्णय सृष्टि के रचयिता ही करेंगे, कार्यालय का कोई मनुष्य नहीं । यहाँ ज़रूरतों का सिद्धांत काम करता है । फाइल खुल जाए, यह आपकी ज़रूरत है, कम्प्यूटर की नहीं । कम्प्यूटर आपके दिए गए कमांड और अपनी ज़रूरतों का तुलनात्मक अध्ययन कर अपनी प्राथमिकता तय करता है । यदि इस प्राथमिकता में आपके फाइल का नंबर आ गया तो आप भाग्यशाली हैं ।

"Not Responding" – एक आध्यात्मिक संदेश

कम्प्यूटर जब "Not Responding" दिखाता है, तो समझ जाइए कि यह संकेत है – "आज कुछ नया न करो, अपने अंदर झाँको ।" यह जीवन की दौड़ से रुककर स्वयं को समझने का अवसर देता है । कम्प्यूटर के दिमाग पर संदेह न करें । आपने और मैंने सिर्फ पढ़ा है कि "बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय........" । कम्प्यूटर जी ने इस शिक्षा को आत्मसात भी कर लिया है । "Not Responding" के समय कम्प्यूटर अपनी आत्मा में झाँक रहा होता है । वह मालूम कर रहा होता है कि वह कौन है, कहाँ से आया है, उसके जीवन का अभिप्राय क्या है, आदि आदि । अध्यात्म की दुनिया में इसे ही आत्मावलोकन कहते हैं । यदि इसके बाद भी कुछ समझ में न आए तो Ctrl+Alt+Delete मंत्र का आँखें बंद कर जाप कर सकते हैं ।

तकनीकी सहायक – नए युग का पुजारी

जब IT Department वाला नौजवान आता है, तो पूरे स्टाफ की कातर निगाहें उसी पर टिक जाती हैं । वह कम्प्यूटर को छूता है, Restart करता है और फिर कहता है – "अब चलना चाहिए ।" उसके इतना कहते ही पीड़ित प्रयोक्ता के तपते रेगिस्तान में वर्षा की कुछ शीतल बूँदों का अनुभव होता है । लेकिन उन बूँदों की क्या औकात तो कम्प्यूटर जी को प्रभावित कर दे । कम्प्यूटर जी तभी चलते हैं वह चलना चाहें – अर्थात् धीरे-धीरे । ऐसा लगने लगता है मानों कम्प्यूटर जी सबको रहीम कवि का वह प्रसिद्ध दोहा सिखाना चाह रहे होः-

कारज धीरे होत है, काहे होत अधीर ।। / समय पाए तरुवर फलै केतक सींचौ नीर ।।

निष्कर्ष

कहने का सारांश यह है कि सरकारी कम्प्यूटर एक मशीन नहीं, बल्कि एक गुरु है । वह आपको धैर्य, शांति और कभी-कभी यौगिक नींद (ऑफिस में झपकी) की भी शिक्षा देता है । उसका धीमापन एक पवित्र अनुभूति है जिसे समझना हर कर्मचारी के वश की बात नहीं, लेकिन जिसने ठीक-ठाक समझ लिया वह जीते जी ही साक्षात मोक्ष को पा जाता है ।

तो अगली बार जब कम्प्यूटर फ्रीज हो जाए तो परेशान न हों, गहरी साँस लें, आँखें बंद करें और सोचेः-

"शायद ब्रह्मांड मुझे ब्रेक लेने का संकेत दे रहा है ।" जय हो सरकारी कम्प्यूटर की !

- एक पीडित कर्मचारी, फिर भी आभारी कर्मचारी !!!

हिंदी भारतीय संस्कृति की आत्मा है - कमलापति त्रिपाठी

घर से दूर मेरी पहली सरकारी नौकरी

शिवानी वर्मा
आशुलिपिक

बचपन से ही सुनती आ रही थी - बेटा, सरकारी नौकरी मिल जाए तो जिंदगी बन जाए । पढ़ाई में मन लगाना, हर परीक्षा की तैयारी करना और फिर दिन-रात मेहनत करना । ये सब मेरे जीवन का हिस्सा बन चुका था । पर मैंने कभी नहीं सोचा था कि जब सरकारी नौकरी मिलने की वह घड़ी आएगी, जब मेरा सपना सच होगा, तब वह खुशी के साथ-साथ आँखों में आँसू भी लेकर आएगी ।

मुझे मेरी पहली सरकारी नौकरी मिली थी - लेकिन शहर था मुंबई । मुंबई का नाम सुनते ही फिल्मों की दुनिया, भीड़-भाड़, तेज़ रफ्तार और ऊँची इमारतों की छवि मस्तिष्क में आते थी । लेकिन अब यह शहर सिर्फ एक सपना नहीं, मेरा नया ठिकाना बनने जा रहा था । घरवालों की खुशी भी उतनी ही थी जितनी चिंता । माँ की आँखों में आँसू थे, खुशी के भी और चिंता के भी । वह बार-बार मेरा चेहरा देखती और कहती - इतनी दूर अकेली कैसे रह पाएगी मेरी बिटिया ! पापा ने कंधा थपथपाया और कहा - डट कर काम करना, यह शुरुआत है ।

मैं ट्रेन में बैठी थी, खिड़की से पीछे छूटते जा रहे थे - मेरा शहर, मेरा घर, मेरी माँ... वह सब कुछ जिन्होंने बचपन से ही मेरा साथ दिया था । एक-एक कर सभी धीरे-धीरे ओझल होते जा रहे थे । मुंबई पहुँचना किसी नए ग्रह पर उतरने जैसा था । स्टेशन पर उतरते ही लोगों की भीड़, टैक्सियों की आवाजें, भागती हुई जिंदगी .. सब कुछ नया और अनजाना था । ऑफिस का पहला दिन और वह सरकारी ठाट-बाट - एक सपना सच होने जैसा था । नया शहर, नए लोग और मैं - एक नई जिंदगी की शुरुआत करने जा रही थी । मुझे मेरी डेस्क मिली और वे फाइलें जिनसे मेरी असली परीक्षा शुरु होनेवाली थी ।

मुंबई की जिंदगी तेज थी, बिल्कुल अलग । शुरुआत के दिन बहुत कठिन थे । न कोई अपना, न कोई बात करनेवाला, कई बार कमरे में अकेले बैठकर रोई भी । माँ की याद आती । उनके बनाए खाने की खुशबू भी महसूस होती । पर धीरे-धीरे मैने सीखा कि अकेलापन भी एक शिक्षक होता है । यह शिक्षक अपने-आप वह सब कुछ सिखा देता है जो अन्यत्र नहीं मिलते । अब मैं कुछ-कुछ महसूस कर सकती थी कि पुराने समय में हमारे ऋषि-मुनि घनघोर जंगल में एकांत में रहकर वर्षों तपस्या क्यों करते थे ।

समय बीतता गया और वही अनजाना शहर अब अपना-सा लगने लगा । लोकल ट्रेन की भीड़, बड़ा पाव की दुकानों की खुशबू, समुद्र की ठंढ़ी हवा, सब मेरे जीवन का हिस्सा बन गए । सबसे बड़ी बात कि मैंने स्वयं पर विश्वास करना सीख लिया । इस शहर ने मुझे आत्मनिर्भर बनना सिखाया, समय का मूल्य समझाया और काम के प्रति ईमानदारी का असली अर्थ बताया । ऑफिस के लोग दोस्त बन गए । कोई

दिल्ली से था, कोई उत्तराखंड से, तो कोई यू.पी से । कुछ मायनों में पूरा भारत मेरे ऑफिस में दर्शन देता है । सबकी एक ही कहानी थी - घर से दूर, पर सपनों के करीब ।

अब जब कभी छुट्टी लेकर घर जाती हूँ तो माँ कहती है - तेरे अंदर कितना बदलाव आ गया है। पहले से कितनी समझदार हो गई है । और मैं मुस्कुरा कर कहती हूँ - मुंबई ने सिखाया है माँ, इसने मुझे बड़ा बना दिया । मुंबई ने मुझे सिर्फ नौकरी नहीं दी, बल्कि मुझे स्वयं से मिलवाया है । इस शहर ने मुझे गिरकर उठना सिखाया, अकेले चलना सिखाया और अपने सपनों को सच करने का हौसला दिया।

भाषा वही जीवित रहती है, जो अपने समाज को जीवंत बनाए रखे। - महादेवी वर्मा

रेगिस्तान और कुआँ

सुश्री प्रिया सिंह
लेखापरीक्षक

जीवन कई मायने में रेगिस्तान के समान है । यह अक्सर कठिनाइयों से भरा होता है । परंतु जो लोग साधन-संपन्न होते हैं, अक्सर इसका अधिकतम लाभ उठाने का तरीका खोज लेते हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि हमेशा पुनरुद्धार और आशा के अवसर उपलब्ध नहीं होते । वे जानते हैं कि रेगिस्तान में एक कुआँ अवश्य होता है ।

रेगिस्तान और कुआँ, दोनों ही जीवन के कई पहलू के द्वंद्व को दर्शाते हैं । रेगिस्तान सूखा, कठिन और निर्जीव प्रतीत होता है । दूसरी ओर कुआँ पानी का एक स्रोत है जो जीवन की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है । यह हमें पोषण देनेवाली शक्ति है । रेगिस्तान में पानी का महत्व अत्यंत अधिक होता है, क्योंकि यह जीवन, वनस्पति, वन्यजीवों और भूदृश्य के अस्तित्व के लिए एक दुर्लभ और मूल्यवान संसाधन है। पानी ही मरुस्थल के विभिन्न जीव-जंतुओं को जीवित रहने में मदद करता है ।

रेगिस्तान जीवन की चुनौती को दर्शाता है । यह उस समय का प्रतीक है जब कोई व्यक्ति अपने जीवन के सबसे निचले स्तर पर होता है । साधन संपन्नता रेगिस्तान में जीवन के लिए सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता है । कुआँ रेगिस्तान को पूरा करता है । यह सच है कि रात सबसे गहरी तब होती है जब सूरज आनेवाला होता है । किसी भी यात्रा का आखिरी चरण सबसे मुश्किल होता है । कुआँ आशा की किरण है । हालाँकि केवल वे ही लोग इस आशा को प्राप्त कर सकते हैं जो अपनी आशा को साकार करने की इस खोज में स्वयं को बनाए रखने में सक्षम हैं ।

रेगिस्तान और कुएँ का द्वंद्व मानव स्वभाव के भीतर भी मौजूद है । हमारे बुरे गुण और निराशावाद रेगिस्तान को दर्शाते हैं, जबकि चरित्र की सुंदरता कुएँ का प्रतीक होती है । जैसे रेगिस्तान में कुआँ आसानी दृष्टिगोचर नहीं होता, वैसे ही चरित्र की सुंदरता भी आसानी से दृष्टिगोचर नहीं होती, लेकिन होती जरूर है । रेगिस्तान दूर-दूर तक सूखे, निर्जीव रेतों की थलराशि ही नहीं होता, अपितु यह मानवीय जद्दोजहद का जीता-जागता संदेश देता प्रकृति-प्रदत्त उपहार होता है । यदि इसे कविता की पंक्तियों में कहा जाए तो कुछ इस तरह होगाः-

उसने चारों ओर नज़र दौडाई / भभक रहा था ओर छोर हीन मरुस्थल

हज़ारों लाखों सालों / लक्ष्यहीन सरोकारहीन / जब से धधक रही आँधी में अपनी दिशाहीनता समेट रहा है

गिरगिट को / अपने होने का हर संभव मर्म आज़माना पड़ा

उसकी जीभ के धागे पर / उभर आया काँटा भी
आग भी जाग पड़ी जठर के सोए में– / काश कि धुंध ही बाधित करती
बूँद भर कहीं सीप उठती / कोई कीट कहीं लेता करवट
गिरगिट को परखना पड़ा अपना होना अनहोना / उसने दिशाएँ आँखों में भर लीं
अपने माथे पर उभरे पसीने की नमी आँकी / जीभ का प्यास काँटा भिगोया
अपनी ही दाढ़ों से अपनी केंचुल उतार दी / और किया आहार
धन्य हो प्रभु ! / इस अनस्तित्व में भी कोई अस्तित्व बस रहा है
किसी को कोई अभाव नहीं खलता ।

जिस प्रकार धूल और कोयले के ढ़ेर के नीचे एक हीरा पाया जा सकता है उसी तरह हमारे पास एक कुआँ है जिसे हमें खोजना है - चाहे वह स्वयं के भीतर हो अथवा सामूहिक रूप में एक समाज के रूप में हो । एक सकारात्मक दृष्टिकोण हमें रेगिस्तानी प्रतिकूलता की भी सराहना करने को प्रेरित करता है । हम सभी को कुएँ तक पहुँचने के लिए अपने तरीके स्वयं खोजने होंगे, जैसे महात्मा बुद्ध ने कहा था - “अपना दीपक स्वयं बनो” ।

हिंदी किसी एक प्रदेश की भाषा नहीं बल्कि देश में सर्वत्र बोली जाने वाली भाषा है।   - विलियम केरी

आत्मा की ज़िम्मेदारी
(शरीर, मन, इन्द्रियाँ, समाज और परमसत्य की यात्रा)

श्री नितिन राजपुरोहित
लेखापरीक्षक

आज की आधुनिक दुनिया में हम सभी अपने-अपने कार्यों, परिवार, करियर और समाज की व्यस्तताओं में इतने डूबे हुए हैं कि अक्सर यह सोचने का समय नहीं मिलता कि हम वास्तव में किसकी सेवा कर रहे हैं। सुबह उठते ही काम, मोबाइल नोटिफिकेशन, ई-मेल और ज़िम्मेदारियाँ हमें घेर लेती हैं। दिनभर की भागदौड़ में मनुष्य यह भूल जाता है कि उसका जीवन किस दिशा में जा रहा है। लेकिन यदि हम गहराई से देखें, तो आत्मा का स्वभाव है "सेवा करना"। चाहे हम मानें या न मानें, हर कोई किसी-न-किसी रूप में हमेशा सेवा ही कर रहा है। प्रश्न यह नहीं कि "सेवा करनी है या नहीं", बल्कि यह कि "हम किसकी सेवा कर रहे हैं?"

शरीर की सेवा

अधिकतर लोग सबसे पहले अपने शरीर की सेवा करते हैं। सुबह उठते ही हम दाँत को ब्रश करते हैं, स्नान करते हैं, अच्छे कपड़े पहनते हैं, जिम जाते हैं, डायट प्लान फॉलो करते हैं। आज के समय में फिटनेस इंडस्ट्री अरबों डॉलर का कारोबार कर रही है। क्यों? क्योंकि मनुष्य अपने शरीर को स्वस्थ और आकर्षक बनाना चाहता है। यह बुरा नहीं है, शरीर का ध्यान रखना ज़रूरी है। लेकिन क्या केवल शरीर ही हमारी पहचान है? यदि आत्मा शरीर से अलग हो जाए तो यह शरीर कुछ ही घंटों में निष्प्राण हो जाता है। इसलिए शरीर की सेवा महत्वपूर्ण है, लेकिन यह हमारी "अंतिम पहचान" नहीं है।

मन की सेवा

आज मानसिक स्वास्थ्य (Mental Health) पर बहुत चर्चा होती है। लोग तनाव से बचने के लिए मेडिटेशन, योगा, माइंडफुलनेस और काउंसलिंग का सहारा लेते हैं। मन को शांति देने के लिए हम Netflix देखते हैं, गाने सुनते हैं, ट्रैवल करते हैं। लेकिन यह सब अस्थायी समाधान है। मन हमेशा नये-नये विचार और इच्छाएँ पैदा करता है। जब तक आत्मा को सही दिशा नहीं मिलती, मन कभी शांत नहीं होता।

इन्द्रियों की सेवा

आज की उपभोक्तावादी दुनिया (Consumerism) हमें लगातार यह बताती है कि "जितना उपभोग करोगे, उतना खुश रहोगे।" अच्छे खाने, फैशनेबल कपड़े, नए मोबाइल, महँगी कार – यही जीवन का लक्ष्य मान लिया जाता है। लेकिन जितना हम इन्द्रियों को तृप्त करते हैं, उतनी ही उनकी भूख बढ़ती है। उदाहरण के लिए, अगर किसी को मिठाई बहुत पसंद है और वह रोज़ खाता है, तो उसका स्वाद धीरे-धीरे कम हो जाता है। यही कारण है कि लोग "कुछ नया" ढूँढते रहते हैं।

समाज की सेवा

कुछ लोग केवल खुद तक सीमित नहीं रहते। वे समाज की सेवा करते हैं – डॉक्टर मरीजों की सेवा करते हैं, सैनिक राष्ट्र की रक्षा करते हैं, वैज्ञानिक नई खोजें करते हैं। यह सेवा निश्चित ही श्रेष्ठ है। लेकिन यदि समाज की सेवा भी आध्यात्मिक आधार पर न हो, तो उसका परिणाम स्थायी नहीं होता।

परमसत्ता की सेवा - सेवा का परम लक्ष्य

शरीर, मन, इन्द्रियाँ और समाज की सेवा सब अच्छी हैं, लेकिन अधूरी हैं। जब तक आत्मा अपने वास्तविक स्वामी – परमसत्ता – की सेवा नहीं करती, तब तक उसे पूर्ण तृप्ति नहीं मिलती।

भगवद्गीता भी यही कहती है:-

यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत्। / यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम्।।9.27।।

अर्थात् – "जो कुछ तुम करते हो, जो कुछ खाते हो, जो कुछ अर्पण करते हो, जो कुछ तप करते हो – वह सब मुझे अर्पित करो।" यही आत्मा की परम जिम्मेदारी है। यही स्वत्वभाव से मुक्ति है, यही अहंभाव अथवा अहंकार से मुक्ति है । जब हम परमसत्ता की सेवा में लगते हैं, तो शरीर, मन, इन्द्रियाँ और समाज – सबको वास्तविक कल्याण मिलता है।

आधुनिक उदाहरण

- एक कॉर्पोरेट कर्मचारी दिन-रात मेहनत करता है, लेकिन भीतर से खालीपन महसूस करता है। जब वह आध्यात्मिक जीवन अपनाता है और "आध्यात्मिक भावनामृत" में मन लगाता है, तो वही काम अब उसके लिए बोझ नहीं बल्कि सेवा बन जाता है।
- आज युवा "purpose of life" ढूँढ रहे हैं। असली उद्देश्य यही है कि हम ईश्वर के प्रतिनिधि बनकर, उनकी करुणा को समाज में फैलाएँ।

आध्यात्मिक भावनामृत का महत्व

आध्यात्मिक भावनामृत केवल उपासना-पद्धति नहीं है। यह जीवन जीने की एक कला है, जिसमें हम अपने हर कार्य को परमात्मा की सेवा मानकर करते हैं। इससे:

- मन शांत होता है
- रिश्ते मजबूत होते हैं
- काम में प्रेरणा बढ़ती है
- और जीवन में स्थायी संतोष मिलता है

समाज की सेवा के रूप में आध्यात्मिकता

कई लोग प्रश्न करते हैं – "ईश्वर क्यों चाहते हैं कि हम उनसे प्रार्थना करें?" सच्चाई यह है कि ईश्वर को हमारी प्रार्थना की आवश्यकता नहीं है। उन्हें किसी वस्तु की कमी नहीं है। प्रार्थना और सेवा से लाभ हमें और समाज को होता है। जब जीव ईश्वर से जुड़ता है, तो वह स्वार्थी नहीं रहता। वह दूसरों की सेवा करना चाहता है। इसलिए सच्ची आध्यात्मिकता हमें सिखाती है – "स्वयं को सुधारो, ईश्वर से जुड़ो और समाज की निःस्वार्थ सेवा करो।" आत्मा की यात्रा केवल शरीर, मन और इन्द्रियों की सेवा तक सीमित नहीं है। उसकी असली ज़िम्मेदारी है – परमात्मा की सेवा करना और उस सेवा के भाव से समाज का

कल्याण करना। जब हम अपने जीवन को इस दृष्टि से जीते हैं, तो न केवल हमें आत्मिक शांति मिलती है, बल्कि हम समाज को भी एक बेहतर दिशा देते हैं।

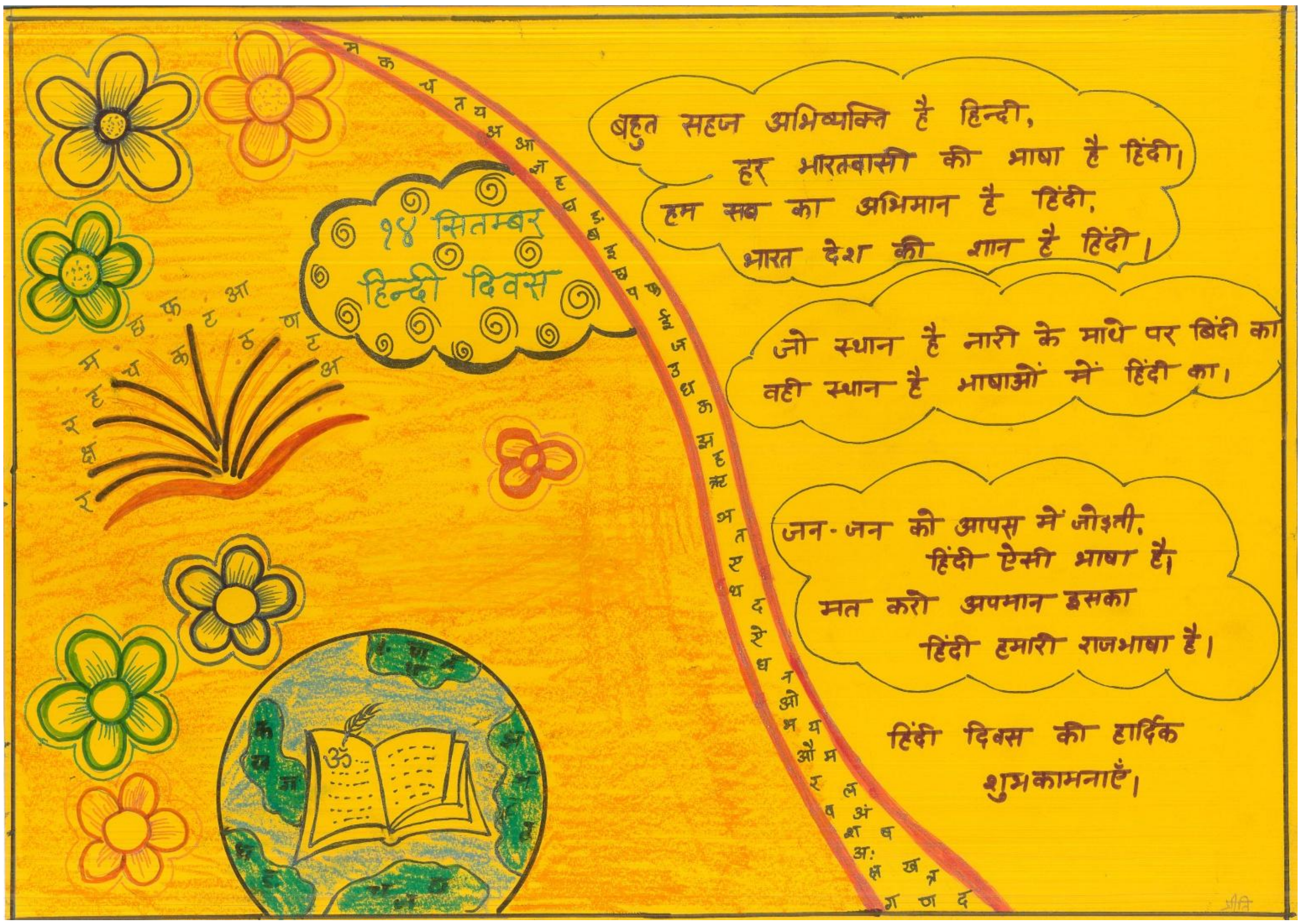

हिंदी भाषा नहीं, यह आत्मा है भारतीयता की ।   - श्री रामधारी सिंह दिनकर

सफरनामा

सुश्री शिवानी
स.ले.प.अ.

सुबह की अलार्म घड़ी बजती नहीं, बल्कि चिल्ला उठती है - उठो मुंबई, तेरा इंतजार हो रहा है । लेकिन मुंबई की सुबह की असली शुरुआत लोकल ट्रेन के दरवाजे पर होती है, जहाँ हर कोई रेस में लगा हुआ है - कौन सबसे पहले । हमें क्या मालूम था कि जो खेल हम बचपन में खेला करते थे वही खेल इतने बड़े होने पर भी खेलना पड़ेगा । घर से निकलकर स्टेशन पहुँचने तक तो फिर भी ठीक है । असली दृश्य तो स्टेशन पहुँचकर देखने को मिलता है, जो अपने आप में ही एक युद्ध का मैदान है और फिर जैसा ऊपर बताया, ट्रेन पकड़ना अपने-आप में एक ओलंपिक की रेस है ।

जिसको सीट मिल गई उसने मेडल जीता हो, ऐसा प्रतीत होता है । फिर जो खड़ा है उसे भीड़ से अलग धक्का-मुक्की करनी होती है मानो खैरात में नकदी बाँटी जा रही हो । जो पहले जाएगा वह ज्यादा पाएगा या लूटेगा । कौन सबसे पहले जाकर प्रसाद ग्रहण करेगा । ट्रेन में घुसते ही मानवता के सारे नियम बदल जाते हैं । यहाँ हर कोई एक दूसरे से आगे निकलने की होड़ में लगा हुआ रहता है और वह भी बिना किसी हथियार के । बस, हाथ और कोहनी ही काफी हैं । ट्रेन में भीतर घुसते ही अलग दृश्य होता है । जिन्हें सीट मिल जाती है वे स्वयं को राजा घोषित कर देते हैं । जो खड़े रह गए हैं वे मानव-स्तंभ बन जाते हैं । एक दूसरे से ऐसे सटकर खड़े होते हैं कि कोई गिरना चाहे तब गिर भी न सके ।

खैर जैसे-तैसे करके कुर्ला स्टेशन पहुँचते हैं । वहाँ पहुँचकर एक अलग मोर्चा शुरु होता है ऑटो रिक्शा का । यहाँ ऑटो रिक्शावालों का अलग ही नखरा होता है । पचास ऑटोवाले से पूछने पर एक का सकारात्मक उत्तर पाकर राहत यों मिलती है मानो जग जीत लिया हो । पूछने पर ऑटोवाले जिस तरह से रिक्वेस्ट को रिजेक्ट करते हैं, वह दृश्य स्वयं को असहाय समझने पर मजबूर कर देता है । जिस लोकेशन पर हमारा कार्यालय स्थित है वहाँ का नाम सुनकर तो ऑटोवालों के चेहरे का रंग ऐसे बदल जाता है मानों हमने उनसे चाँद तारे माँग लिए हों । जैसे-तैसे ऑटो मिलता है तो वह रास्ते में गड्ढ़ों को ऐसे पार करता है जैसे वह रेसिंग गेम खेल रहा हो । हम उछलते-कूदते हुए शरीर सही-सलामत लिए हुए अपने कार्यालय पहुँचते हैं । चेहरे पर थकावट होती है और मन में संतोष ऐसे होता है मानो एक और युद्ध जीत लिया हो । मुंबई की भागदौड़ ही इस शहर की असली पहचान है । हर दिन एक नया सफर, एक नई चुनौती । यही है हमारा रोज का सफरनामा । शाम को ऑफिस से वापस घर जाते हुए एक और जंग शुरु हो जाती है । इस जंग की कहाना बहुत ही कारुणिक है, अतः नहीं सुनाउँगी ।

हिंदी भाषा की उन्नति के बिना हमारी उन्नति असम्भव है - गिरिधर शर्मा

झेलम से गङ्गा तक

जय राम सिंह
कनिष्ठ अनुवादक

गीत-ऋषि स्मृतिशेष गोपालदास नीरज जी की एक प्रसिद्ध काव्य-पंक्ति हैः-

अब तो मज़हब कोई ऐसा भी चलाया जाए।
जिसमें इंसान को इंसान बनाया जाए।
आग बहती है यहाँ गंगा में झेलम में भी
कोई बतलाए कहाँ जाके नहाया जाए ।

पर, मेरी झेलम से गङ्गा तक की यह यात्रा अविस्मरणीय ही नहीं, बल्कि सैन्य अनुशासन, रोमांच, विस्मय और श्रृंगार से लबरेज है । कारगिल-युद्ध का वायुकेन्द्र श्रीनगर, जो झेलम नदी के किनारे अवस्थित है, से मेरे पैतृक गाँव जो गंगा नदी के किनारे अवस्थित है, तक की इस यात्रा ने मस्तिष्क पर कालजयी लकीर खींची है ।

26 जुलाई 1999 को टाइगर हिल पर हमारे रण-बाँकुरों द्वारा तिरंगा झंडा फहराने के साथ ही कारगिल-युद्ध समाप्त हो गया था । भारतीय थल सेना द्वारा चलाया गया 'ऑपरेशन विजय' पूर्ण हो गया था, किंतु भारतीय वायुसेना द्वारा चलाया गया 'ऑपरेशन सफेद-सागर' अभी भी जारी था । पूरे कारगिल-युद्ध के दौरान श्रीनगर एयरबेस सबसे प्रमुख एयरबेस के रूप में उभरा था । भारतीय वायुसेना के पास जितने भी लड़ाकू और मालवाहक विमान थे, उनमें से हर तरह के विमान को एक ही एयरबेस में देखने का सौभाग्य हमें मिला था । श्रीनगर एयरबेस से रोजाना दर्जनों IL-76 और AN-32 विमान उड़ानें भर रहे थे । उन विमानों में चोटियों से लौट रहे भारतीय थल सेना के जवान भर-भरकर अपने-अपने यूनिटों अथवा घरों को जा रहे होते । कंधे पर बैग लादे विमानों की ओर उन्हें जाते देखने का दृश्य अद्भुत था। महायोद्धा कर्ण एक बार संसार के सभी शासकों को हराकर उनके मुकुट के साथ हस्तिनापुर लौटे थे, आगे-आगे कर्ण और पीछे-पीछे मुकुटों का अम्बार । बीआर चोपड़ा द्वारा बनाए गए टीवी धारावाहिक 'महाभारत' का वह दृश्य श्रीनगर एयरबेस के उस दृश्य से हू-ब-हू मेल खाता था । हमारी भारतभूमि 'वीरभोग्या वसुन्धरा' यों ही नहीं कही जाती ! इस मिट्टी में ही वह दम है जो हमारे इन रण-बाँकुरों जैसे बेटों को पैदा कर सकती है ।

वायुसैनिकों को मन ही मन बड़ी कोफ्त होती - इन्हें तो छुट्टी मिल गई है, हमें कब मिलेगी । लेकिन जैसे ही उन फौलादी सैनिकों का दर्शन होता, तो हमारे हाथ अनायास ही उनके अप्रतिम शौर्य और अदम्य साहस को सैल्यूट करने को उठ जाते । ऑपरेशन सफेद सागर शुरु होते ही वायुसेना की अन्य क्षेत्रों में स्थित विभिन्न यूनिटों से सैंकड़ों वायुसैनिकों को 'ऑगमेंटेड मैनपावर' के रूप में रातों-रात श्रीनगर

पहुँचा दिया गया था । हालाँकि वह मई-जून का महीना था जब दिन में श्रीनगर का तापमान भी लगभग सामान्य ही रहता है । लेकिन रात तो रात होती है, वह भी श्रीनगर की रात ! लेकिन जैसा कि कहा जाता है, जगह कमरे में नहीं, दिल में होती है । एक-एक कमरे में दर्जनों वायुसैनिक भरे गए लेकिन पहले से रह रहे किसी भी वायुसैनिक ने उफ् तक नहीं की । उल्टे सारी चारपाइयों को खड़ा करके फर्श पर ही सारे गद्दे लगा दिए गए थे ताकि अधिक से अधिक लोग सो सकें ।

मेरी ड्यूटी 'मेट डब्ल्यूटी' में लगी थी । मेरा काम था पूरे कश्मीर और विशेषकर अग्रिम चौकियों के मौसम का हाल कम से कम समय में मौसम विभाग को और पश्चिमी वायु कमान मुख्यालय को बताना । मौसम विभाग उसके आधार पर अपनी मौसम-संबंधी चेतावनी जारी करता और उस चेतावनी के आधार पर सभी वायु-मिशन तय किए जाते । गणित और संगीत की तरह ही 'मोर्स कोड' में संदेश प्राप्त करना और भेजना, दोनों निरंतर अभ्यास की चीजें होती हैं । हालाँकि जोधपुर में बिताए वायुसैनिक जीवन के अपने प्रथम पाँच वर्षों में मैंने मोर्स-कोड को छुआ भी नहीं था । लेकिन पाँच वर्ष इतने भी अधिक नहीं होते कि प्रशिक्षण-केन्द्र के अनुदेशकों द्वारा साम-दाम-दंड-भेद आजमाकर सिखाए गए कोड को मैं भूल जाता । बस, एक-दो दिन लगे और मैं लगभग तीस शब्द प्रति मिनट की गति से संदेशों को प्राप्त करने/भेजने लगा ।

युद्धकाल में अमूमन ड्यूटी का कोई समय निश्चित नहीं होता है । मानो तो चौबीसों घंटे और न मानो तब भी चौबीसों घंटे । युद्धकाल में कोई 'इफ-बट' नहीं होता और यह उचित भी है । ऑगमेन्टेड मैनपावर के आने से मेरा कार्यभार कुछ हल्का हो गया । धीरे-धीरे इतना हल्का हो गया कि प्रतीत ही नहीं होता था कि हम युद्धकाल में हैं । ख़ैर, नियत समय आने पर ऑपरेशन सफेद-सागर भी पूर्ण हो गया और हमलोगों की छुट्टियाँ खुल गईं । मोबाइल फोन का ज़माना श्रीनगर तक नहीं पहुँच पाया था। लैंडलाइन से फोन मिलाने में इतनी देर लग जाती थी कि उतनी देर में कोई फर्राटा धावक उधमपुर तक पहुँच जाता । मुझे छुट्टी मिल गई थी । शाम को एक AN-32 उधमपुर जानेवाला था । किसी तरह मैनिफेस्ट में नाम आ गया । मैनिफेस्ट में नाम आने की खुशी छुट्टी मिलने की खुशी से किसी भी मायने में कमतर न थी । पंक्तिबद्ध होकर छुट्टी जानेवाले लोग विमान में चढ़ गए । विमान ने उड़ान भरी । पाँच मिनट के बाद विमान में घोषणा हुई कि उधमपुर में मौसम बहुत खराब है, अतः विमान उधमपुर नहीं जाएगा । हमलोगों के चेहरे ऐसे लटके जैसे हमारी अप्रूव्ड छुट्टी कैंसिल कर दी गई हो । आशंका थी कि विमान कहीं वापस श्रीनगर में ही न लैंड कर जाए । लेकिन हारे को हरिनाम ! हरिनाम सुमिरन काम कर गया । तुरंत फिर से घोषणा हुई कि विमान चंडीगढ़ जा रहा है । यह समाचार अंधे को दृष्टि मिलने जैसा था । उधमपुर से जम्मू, जम्मू से दिल्ली फिर दिल्ली से गंतव्य का लफड़ा सिकुड़कर अब चंडीगढ़/अंबाला से गंतव्य हो गया था । हम सब मारे खुशी के निढ़ाल हो रहे थे । पन्द्रह-बीस मिनटों की फ्लाइट के बाद एक और घोषणा हुई । बताया गया कि विमान चंडीगढ़ नहीं, बल्कि बागडोगरा जा रहा है। बिहारियों/बंगालियों की बाँछें खिल गईं लेकिन अन्य लोगों के चेहरे फिर उतर गए । कुछ देर में विमान

लैंड हो गया । हमलोग आश्चर्यचकित थे कि इतनी जल्दी बागडोगरा कैसे आ गया ? सुना था कि भारतीय वायुसेना कुछ भी कर सकती है । परंतु एक पुराने मालवाहक विमान को लड़ाकू विमान की गति से उड़ाने की घटना साक्षात सामने थी । लेकिन यह भ्रम था । पूछने पर पता चला कि हम बागडोगरा में नहीं, बल्कि आगरे में हैं । दक्षिण भारत, मध्य भारत और उत्तरी भारत के वायुसैनिक कूद-कूद कर निकल गए। मैं भी कूदा । लेकिन मुझे अचानक पायलट साहब दिख गए । सैल्यूट मारकर पूछा कि सर, अगला गंतव्य क्या है ? पायलट सर ने बताया कि बागडोगरा वाया राँची । राँची ! मुझे विश्वास ही नहीं हो रहा था । पहला कारण यह कि राँची में वायुसेना का कोई बेस नहीं है, दूसरा कि मेरी जानकारी में ऐसा कोई काम नहीं दिख रहा था जिसके लिए विमान को राँची जाना पड़े । मैं वापस मुड़ा और भगवान का नाम लेकर विमान में फिर से बैठ गया ।

दस-पन्द्रह मिनटों के बाद विमान ने पुनः उड़ान भरी । यात्री के रूप में मैं अकेला था । एक घंटा के बाद विमान लैंड करने के लिए नीचे उतरने लगा । पहले जंगल दिखे, फिर धीरे-धीरे बड़े नगर जैसा कुछ प्रतीत हुआ । राँची तब तक राजधानी नहीं बन पाई थी । अतः उसके एयरफील्ड का रुतबा भी नहीं था। छोटा-सा रन-वे और इक्के-दुक्के लोग । मैं मान गया था कि यह राँची ही है । ईश्वर को धन्यवाद करता मैं विमान से बाहर आया । जो गाड़ी मिली उसे ही ले लिया । उसने जितना किराया बोला उतना ही मान गया । यह समय मोल-भाव का हर्गिज नहीं था । इस समय पर तो कवियों ने कितने ही महाकाव्य लिख डाले हैं । अनगिनत फिल्में बनी होंगी, इन क्षणों पर आधारित । अगले दो घंटों के बाद मैं सेन्ट्रल कोलफील्ड्स लिमिटेड के विश्वप्रसिद्ध पिपरिया कोलफील्ड्स के एक छोटे से क्वार्टर के गेट पर दस्तक दे रहा था । जी हाँ, यह मेरी ससुराल है और मेरी नव-ब्याहता पत्नी अभी मायके में ही थी। कुदरत का करिश्मा कहें या कुछ और कहें, दरवाजा मेरी धर्मपत्नी जी ने ही खोला । सामने उनका पति था जिसके आने की दूर-दूर तक कोई भनक तक न थी । मेरी पत्नी की आँखों में उमड़ी चमक, चेहरे पर उभरी लाज और हृदय में हो रहा नृत्य - उफ्फ ! काश, यह दृश्य कभी खत्म ही नहीं होता ! न वे कुछ बोलीं न मैं कुछ बोला । पर, वे भी बोल रही थी और मैं भी बोल रहा था, वे भी सुन रही थीं और मैं भी सुन रहा था । मेरा पुरुषोचित हृदय अपनी प्रिया को सीने से लगा लेने को बेताब हुआ जा रहा था । तभी अन्दर से आवाज़ आई - कौन है बेटी ? बेटी क्या कहती ? कुछ नहीं बोली । बीस-तीस सेकेंड तक कोई आवाज़ नहीं आई तो भीतर से भाभीजी दौड़ी-दौड़ी आईं । सामने महीनों से नहीं मिल पाए पति और पत्नी एक दूसरे के आमने-सामने मौन-श्रृंगार का आस्वादन कर रहे थे । भाभीजी की आँखें चमक गईं । पहले तो कुछ झेंपीं फिर संभलकर बोलीं - माँजी इधर आइए, एजी इधर आइए - देखिए तो कौन आए हैं । क्षण भर में पूरा घर उत्सवमय हो गया था । मेरी सासु माँ प्रेमातिरेक में मुस्कुरा भी रही थी और रो भी रही थी । अपनी बेटी को अखंड सौभाग्यवती होने के अनगिनत आशीष दिए जा रही थी । अगले दिन पूरा कोलफील्ड्स उमड़ गया था - कारगिल-युद्ध से लौटे एक वायुयोद्धा की एक झलक पाने को ।

ससुराल की बात तो हो गई, पर मेरे घरवाले अभी भी यही समझ रहे थे कि मैं श्रीनगर में ही हूँ। शाम को पत्नी सहित मैं पलामू एक्सप्रेस में सवार हो गया । महात्मा गाँधी सेतु पार करते समय गंगा मइया को मन ही मन प्रणाम किया । गाँव की सीमा पर गाँव की मिट्टी को चूमा । बगल के खेत में कुछ चरवाहे मवेशियों को चरा रहे थे । मुझे मिट्टी चूमते हुए देख लिया और पहचान भी गए । हम दोनों रिक्शे से जा रहे थे । उसके पहले ही एक चरवाहा खेत-दर-खेत फाँदते हुए मेरे घर पहुँचा और मेरे आने की सूचना माँ को दे दी । आरती की थाली सजाकर माँ घर के दरवाजे पर बैठ गई । दीपक को जलाना बाकी था जो तब जलता जब सूचना सही होती । रिक्शा मेरे गाँव की बस्ती में जैसे ही घुसी, क्या बच्चे और क्या बूढ़े, क्या महिला और क्या रोगी - सब रिक्शे के पीछे-पीछे हो लिए । माँ की ममता से अधिक पाक दुनिया में कुछ भी तो नहीं । माँ के चरण छूते ऐसा लग रहा थी जैसे इन्द्रलोक को अँगूठा दिखा रहा होऊँ।

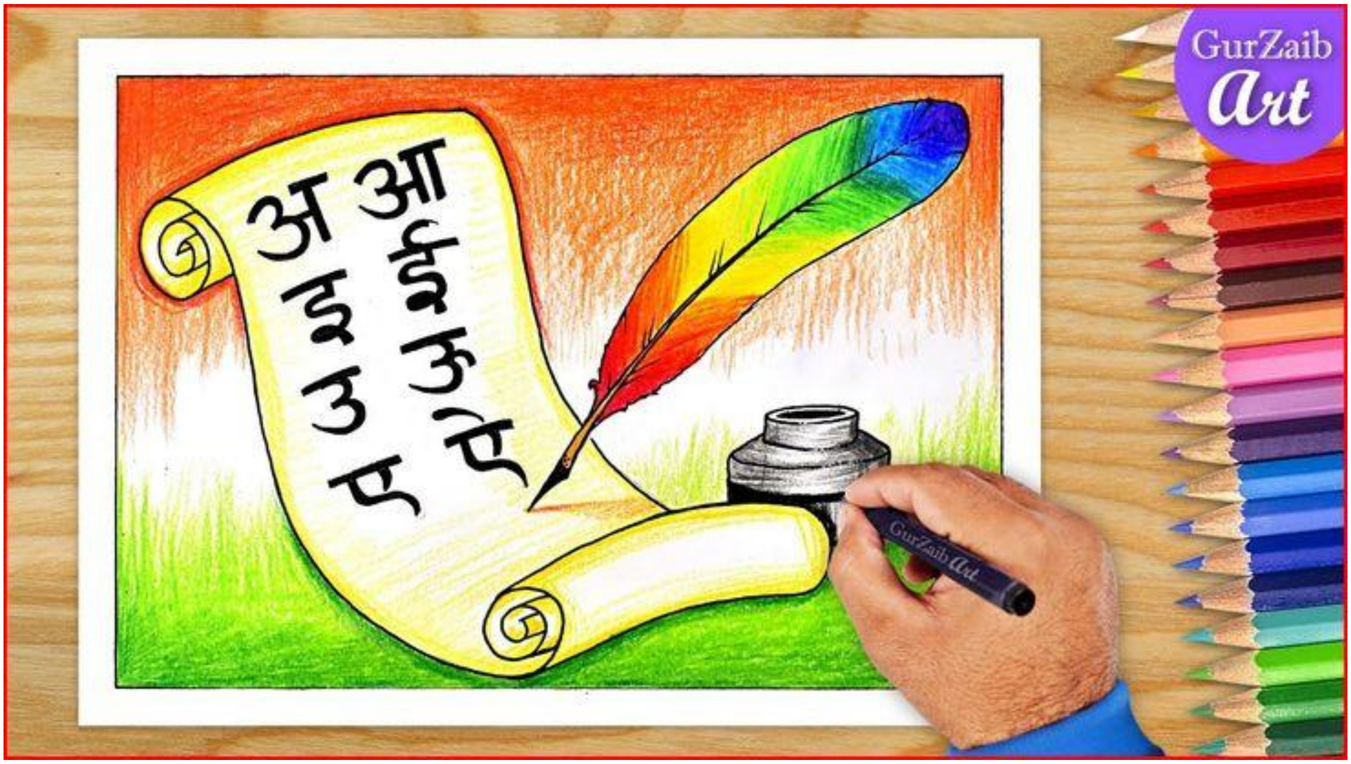

सच्चा राष्ट्रीय साहित्य राष्ट्रभाषा से उत्पन्न होता है। - वाल्टर चेनिंग

सरकारी कार्यालय और पर्यावरण

प्रिंट की हर प्रति का मूल्य समझिए - बचाइए कागज़, बचाइए पेड़

अनिल पूनिया
आशुलिपिक

सरकारी कार्यालयों में प्रतिदिन हजारों-लाखों कागज़ के पृष्ठ उपयोग में लाए जाते हैं। फाइलों, रिपोर्टों, पत्रों, मीटिंग एजेंडा, ऑडिट रिपोर्ट और सूचना पत्रों के रूप में कागज़ का उपयोग कई बार आवश्यकता से अधिक होता है । विशेषकर आज के डिजिटल युग में, जब अधिकतर जानकारी ऑनलाइन भेजी और देखी जा सकती है, तब भी हम पुराने तरीकों में ही उलझे हुए हैं।

कागज़ और पेड़ - सीधा संबंध

आपको जानकर हैरानी होगी कि एक टन (1000 किलोग्राम) कागज़ बनाने में औसतन 17 पेड़ काटे जाते हैं, और इसमें 20,000 लीटर पानी और 2600 यूनिट बिजली की खपत होती है।
भारत में हर साल लगभग 47 लाख टन कागज़ की खपत होती है, और यह संख्या 2025 तक 2.5 करोड़ टन तक पहुँचने की संभावना है।

विश्व स्तर पर हर साल लगभग 15 अरब पेड़ काटे जाते हैं, जिनमें से 42% केवल कागज़ बनाने के लिए।

कार्यालयों में स्थिति

सरकारी दफ्तरों में दिनभर प्रिंटर चलते रहते हैं। कई बार एक ही मेल को बार-बार निकाला जाता है, या रिपोर्ट का पूरा प्रिंट लिया जाता है जबकि उसकी ज़रूरत केवल कुछ पन्नों तक होती है। इससे न केवल कागज़ की बर्बादी होती है, बल्कि वृक्षों की कटाई, जल की खपत, बिजली की बर्बादी और कार्बन उत्सर्जन भी बढ़ता है।
क्या करें हम?

1. "Think before you print" नीति अपनाएँ - क्या वास्तव में प्रिंट की आवश्यकता है?
2. PDF या डिजिटल नोट्स का अधिक प्रयोग करें। ई-ऑफिस से ही पत्रों को रिसीव और डिस्पैच करें । इससे कागज़ की बचत होगी और बहुत सारे पेड़ों को कटने से बचाया जा सकेगा।
3. यदि प्रिंट ज़रूरी है, तो दोनों तरफ प्रिंट करें (duplex printing)।

4. प्रिंटिंग के लिए रीयूज़ पेपर का उपयोग करें (जिनका एक तरफ इस्तेमाल हुआ हो)।

5. कर्मचारियों को पेपर सेविंग के लिए प्रशिक्षण और जागरूकता दें।

6. कार्यालय में "ग्रीन कॉर्नर" बनाकर पोस्टर्स/स्लोगन लगाएँ - "प्रति प्रिंट = एक वृक्ष की साँस"।

7. फाइलों का अधिकतम डिजिटलीकरण (e-office / e-files) किया जाए।

पर्यावरण का महत्व

पेड़ केवल छाया या लकड़ी के स्रोत नहीं हैं, बल्कि वे प्राकृतिक संतुलन के आधार हैं - ऑक्सीजन देते हैं, प्रदूषण कम करते हैं, मिट्टी का क्षरण रोकते हैं और जीव-जंतुओं का घर हैं। कागज़ की बर्बादी सिर्फ कार्यालय की ही नहीं, हम सबकी साँसों की कीमत है।

इसलिए यदि हम एक पेपर बचाते हैं, तो हम एक पेड़ की साँसें बचाते हैं।

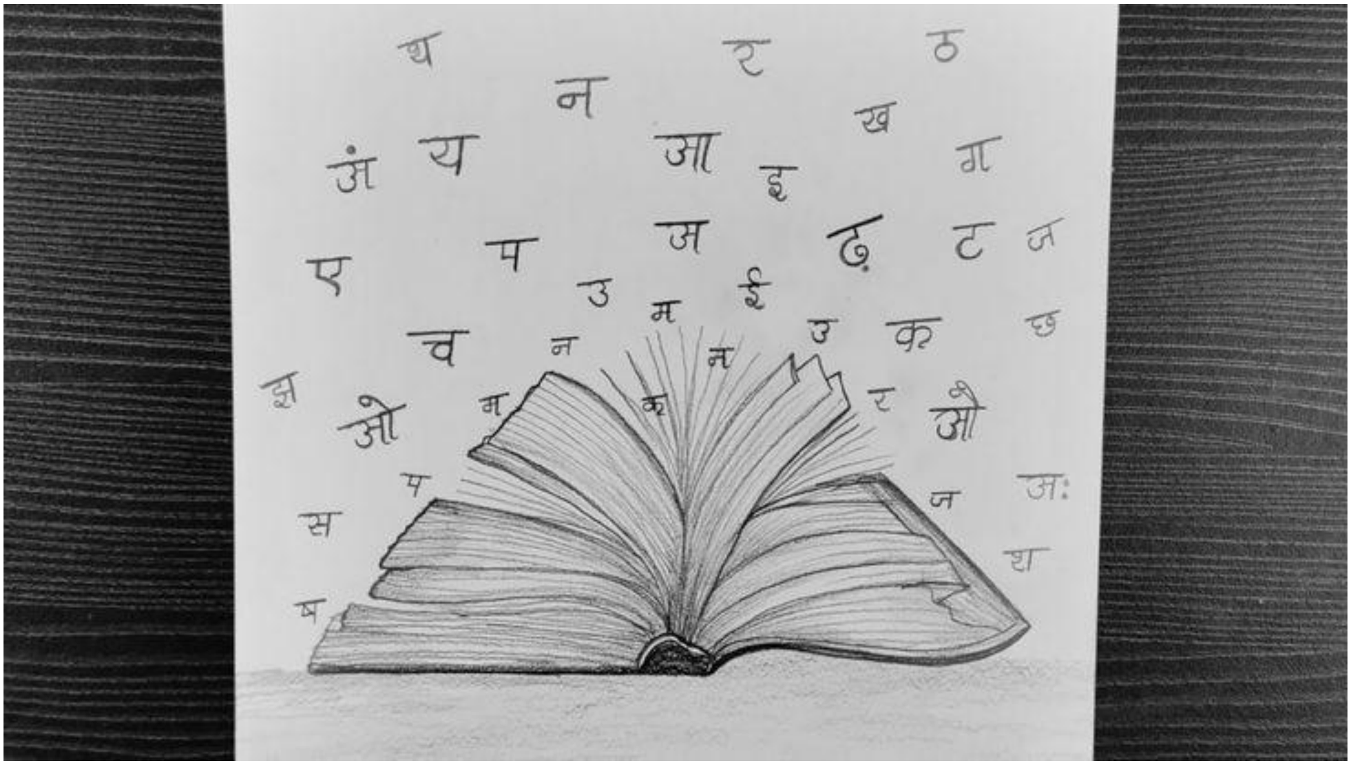

राजभाषा अधिनियम 1963

भारत गणराज्य के चौदहवें वर्ष में संसद द्वारा निम्नलिखित रूप में यह अधिनियमित होः–

1. संक्षिप्त नाम और प्रारम्भ-

(1) यह अधिनियम राजभाषा अधिनियम, 1963 कहा जा सकेगा।

(2) धारा 3 जनवरी, 1965 के 26वें दिन को प्रवृत्त होगी और इस अधिनियम के शेष उपबंध उस तारीख को प्रवृत्त होंगे जिसे केन्द्रीय सरकार शासकीय राजपत्र में अधिसूचना द्वारा, नियत करे और इस अधिनियम के विभिन्न उपबंधों के लिए विभिन्न तारीख नियत की जा सकेंगी।

2. परिभाषाएं- इस अधिनियम में जब तक कि संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो, –

(क) 'नियत दिन' से, धारा 3 के संबंध में, जनवरी, 1965 का 26वां दिन अभिप्रेत है और इस अधिनियम के किसी अन्य उपबंध के संबंध में वह दिन अभिप्रेत है जिस दिन को वह उपबंध प्रवृत्त होता है;

(ख) 'हिन्दी' से वह हिन्दी अभिप्रेत है जिसकी लिपि देवनागरी है।

3. संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए और संसद में प्रयोग के लिए अंग्रेजी भाषा का बना रहना- (1) संविधान के प्रारंभ से पंद्रह वर्ष की कालावधि की समाप्ति हो जाने पर भी, हिन्दी के अतिरिक्त अंग्रेजी भाषा, नियत दिन से ही, –

(क) संघ के उन सब राजकीय प्रयोजनों के लिए जिनके लिए यह उस दिन से ठीक पहले प्रयोग में लाई जाती थी ; तथा

(ख) संसद में कार्य के संव्यवहार के लिए, प्रयोग में लाई जाती रह सकेगी:

परंतु संघ और किसी ऐसे राज्य के बीच, जिसने हिन्दी को अपनी राजभाषा के रूप में नहीं अपनाया है, पत्रादि के प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा प्रयोग में लाई जाएगीः

परंतु यह और कि जहां किसी ऐसे राज्य के, जिसने हिन्दी को अपनी राजभाषा के रूप में अपनाया है और किसी अन्य राज्य के, जिसने हिन्दी को अपनी राजभाषा के रूप में नहीं अपनाया है, बीच पत्रादि के प्रयोजनों के लिए हिन्दी को प्रयोग में लाया जाता है, वहां हिन्दी में ऐसे पत्रादि के साथ-साथ उसका अनुवाद अंग्रेजी भाषा में भेजा जाएगा:

परंतु यह और भी कि इस उपधारा की किसी भी बात का यह अर्थ नहीं लगाया जाएगा कि वह किसी ऐसे राज्य को, जिसने हिन्दी को अपनी राजभाषा के रूप में नहीं अपनाया है, संघ के साथ या किसी ऐसे राज्य के साथ, जिसने हिन्दी को अपनी राजभाषा के रूप में अपनाया है, या किसी अन्य राज्य के साथ, उसकी सहमति से, पत्रादि के प्रयोजनों के लिए हिन्दी को प्रयोग में लाने से निवारित करती है, और ऐसे किसी मामले में उस राज्य के साथ पत्रादि के प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग बाध्यकर न होगा ।

(2) उपधारा (1) में अन्तर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी, जहां पत्रादि के प्रयोजनों के लिए हिन्दी या अंग्रेजी भाषा–

(i) केन्द्रीय सरकार के एक मंत्रालय या विभाग या कार्यालय के और दूसरे मंत्रालय या विभाग या कार्यालय के बीच;

(ii) केन्द्रीय सरकार के एक मंत्रालय या विभाग या कार्यालय के और केन्द्रीय सरकार के स्वामित्व में के या नियंत्रण में के किसी निगम या कंपनी या उसके किसी कार्यालय के बीच;

(iii) केन्द्रीय सरकार के स्वामित्व में के या नियंत्रण में के किसी निगम या कंपनी या उसके किसी कार्यालय के और किसी अन्य ऐसे निगम या कंपनी या कार्यालय के बीच; प्रयोग में लाई जाती है वहां उस तारीख तक, जब तक पूर्वोक्त संबंधित मंत्रालय, विभाग, कार्यालय या निगम या कंपनी का कर्मचारीवृन्द हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त नहीं कर लेता, ऐसे पत्रादि का अनुवाद, यथास्थिति, अंग्रेजी भाषा या हिन्दी में भी दिया जाएगा।

(3) उपधारा (1) में अन्तर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी, हिन्दी और अंग्रेजी भाषा दोनों ही-

(i) संकल्पों, साधारण आदेशों, नियमों, अधिसूचनाओं, प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदनों या प्रेस विज्ञप्तियों के लिए, जो केन्द्रीय सरकार द्वारा या उसके किसी मंत्रालय, विभाग या कार्यालय द्वारा या केन्द्रीय सरकार के स्वामित्व में के या नियंत्रण में के किसी निगम या कंपनी द्वारा या ऐसे निगम या कंपनी के किसी कार्यालय द्वारा निकाले जाते हैं या किए जाते हैं;

(ii) संसद के किसी सदन या सदनों के समक्ष रखे गए प्रशासनिक तथा अन्य प्रतिवेदनों और राजकीय कागजपत्रों के लिए;

(iii) केन्द्रीय सरकार या उसके किसी मंत्रालय, विभाग या कार्यालय द्वारा या उसकी ओर से या केन्द्रीय सरकार के स्वामित्व में के या नियंत्रण में के किसी निगम या कंपनी द्वारा या ऐसे निगम या कंपनी के किसी कार्यालय द्वारा निष्पादित संविदाओं और करारों के लिए तथा निकाली गई अनुज्ञप्तियों, अनुज्ञापत्रों, सूचनाओं और निविदा-प्ररूपों के लिए, प्रयोग में लाई जाएंगी।

(4) उपधारा (1) या उपधारा (2) या उपधारा (3) के उपबंधों पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना यह है कि केन्द्रीय सरकार धारा 8 के अधीन बनाए गए नियमों द्वारा उस भाषा या उन भाषाओं का उपबंध कर सकेगी जिसे या जिन्हें संघ के राजकीय प्रयोजन के लिए, जिसके अन्तर्गत किसी मंत्रालय, विभाग, अनुभाग या कार्यालय का कार्यकरण है, प्रयोग में लाया जाना है और ऐसे नियम बनाने में राजकीय कार्य के शीघ्रता और दक्षता के साथ निपटारे का तथा जन साधारण के हितों का सम्यक ध्यान रखा जाएगा और इस प्रकार बनाए गए नियम विशिष्टतया यह सुनिश्चित करेंगे कि जो व्यक्ति संघ के कार्यकलाप के संबंध में सेवा कर रहे हैं और जो या तो हिन्दी में या अंग्रेजी भाषा में प्रवीण हैं वे प्रभावी रूप से अपना काम कर सकें और यह भी कि केवल इस आधार पर कि वे दोनों ही भाषाओं में प्रवीण नहीं है उनका कोई अहित नहीं होता है।

(5) उपधारा (1) के खंड (क) के उपबंध और उपधारा (2), उपधारा (3) और उपधारा (4), के उपबंध तब तक प्रवृत्त बने रहेंगे जब तक उनमें वर्णित प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग समाप्त कर देने के लिए ऐसी सभी राज्यों के विधान मंडलों द्वारा, जिन्होंने हिन्दी को अपनी राजभाषा के रूप में नहीं अपनाया है, संकल्प पारित नहीं कर दिए जाते और जब तक पूर्वोक्त संकल्पों पर विचार कर लेने के पश्चात् ऐसी समाप्ति के लिए संसद के हर एक सदन द्वारा संकल्प पारित नहीं कर दिया जाता।]

4. राजभाषा के संबंध में समिति- (1) जिस तारीख को धारा 3 प्रवृत्त होती है उससे दस वर्ष की समाप्ति के पश्चात, राजभाषा के संबंध में एक समिति, इस विषय का संकल्प संसद के किसी भी सदन में राष्ट्रपति की पूर्व मंजूरी से प्रस्तावित और दोनों सदनों द्वारा पारित किए जाने पर, गठित की जाएगी।

(2) इस समिति में तीस सदस्य होंगे जिनमें से बीस लोक सभा के सदस्य होंगे तथा दस राज्य सभा के सदस्य होंगे, जो क्रमशः लोक सभा के सदस्यों तथा राज्य सभा के सदस्यों द्वारा आनुपातिक प्रतिनिधित्व पद्धति के अनुसार एकल संक्रमणीय मत द्वारा निर्वाचित होंगे।

(3) इस समिति का कर्तव्य होगा कि वह संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए हिन्दी के प्रयोग में की गई प्रगति का पुनर्विलोकन करे और उस पर सिफारिशें करते हुए राष्ट्रपति को प्रतिवेदन करे और राष्ट्रपति उस प्रतिवेदन को संसद के हर एक सदन के समक्ष रखवाएगा और सभी राज्य सरकारों को भिजवाएगा ।

(4) राष्ट्रपति उपधारा (3) में निर्दिष्ट प्रतिवेदन पर और उस पर राज्य सरकारों ने यदि कोई मत अभिव्यक्त किए हों तो उन पर विचार करने के पश्चात् उस समस्त प्रतिवेदन के या उसके किसी भाग के अनुसार निदेश निकाल सकेगा:

परन्तु इस प्रकार निकाले गए निदेश धारा 3 के उपबंधों से असंगत नहीं होंगे ।]

5. केन्द्रीय अधिनियमों आदि का प्राधिकृत हिन्दी अनुवाद- (1) नियत दिन को और उसके पश्चात् शासकीय राजपत्र में राष्ट्रपति के प्राधिकार से प्रकाशित-

(क) किसी केन्द्रीय अधिनियम का या राष्ट्रपति द्वारा प्रख्यापित किसी अध्यादेश का, अथवा

(ख) संविधान के अधीन या किसी केन्द्रीय अधिनियम के अधीन निकाले गए किसी आदेश, नियम, विनियम या उपविधि का, हिन्दी में अनुवाद उसका हिन्दी में प्राधिकृत पाठ समझा जाएगा ।

(2) नियत दिन से ही उन सब विधेयकों के, जो संसद के किसी भी सदन में पुरःस्थापित किए जाने हों और उन सब संशोधनों के, जो उनके संबंध में संसद के किसी भी सदन में प्रस्तावित किए जाने हों, अंग्रेजी भाषा के प्राधिकृत पाठ के साथ-साथ उनका हिन्दी में अनुवाद भी होगा जो ऐसी रीति से प्राधिकृत किया जाएगा, जो इस अधिनियम के अधीन बनाए गए नियमों द्वारा विहित की जाए।

6. कतिपय दशाओं में राज्य अधिनियमों का प्राधिकृत हिन्दी अनुवाद- जहां किसी राज्य के विधान-मंडल ने उस राज्य के विधान-मंडल द्वारा पारित अधिनियमों में अथवा उस राज्य के राज्यपाल द्वारा प्रख्यापित अध्यादेशों में प्रयोग के लिए हिन्दी से भिन्न कोई भाषा विहित की है वहां, संविधान के अनुच्छेद 348 के खण्ड (3) द्वारा अपेक्षित अंग्रेजी भाषा में उसके अनुवाद के अतिरिक्त, उसका हिन्दी में अनुवाद उस राज्य के शासकीय राजपत्र में, उस राज्य के राज्यपाल के प्राधिकार से, नियत

दिन को या उसके पश्चात् प्रकाशित किया जा सकेगा और ऐसी दशा में ऐसे किसी अधिनियम या अध्यादेश का हिन्दी में अनुवाद हिन्दी भाषा में उसका प्राधिकृत पाठ समझा जाएगा।

7. उच्च न्यायालयों के निर्णयों आदि में हिन्दी या अन्य राजभाषा का वैकल्पिक प्रयोग- नियत दिन से ही या तत्पश्चात् किसी भी दिन से किसी राज्य का राज्यपाल, राष्ट्रपति की पूर्व सम्मति से, अंग्रेजी भाषा के अतिरिक्त हिन्दी या उस राज्य की राजभाषा का प्रयोग, उस राज्य के उच्च न्यायालय द्वारा पारित या दिए गए किसी निर्णय, डिक्री या आदेश के प्रयोजनों के लिए प्राधिकृत कर सकेगा और जहां कोई निर्णय, डिक्री या आदेश (अंग्रेजी भाषा से भिन्न) ऐसी किसी भाषा में पारित किया या दिया जाता है वहां उसके साथ- साथ उच्च न्यायालय के प्राधिकार से निकाला गया अंग्रेजी भाषा में उसका अनुवाद भी होगा।

8. नियम बनाने की शक्ति - (1) केन्द्रीय सरकार इस अधिनियम के प्रयोजनों को कार्यान्वित करने के लिए नियम, शासकीय राजपत्र में अधिसूचना द्वारा, बना सकेगी ।

(2) इस धारा के अधीन बनाया गया प्रत्येक नियम, बनाए जाने के पश्चात् यथाशीघ्र, संसद के हर एक सदन के समक्ष, जब वह सत्र में हो, कुल तीस दिन की अवधि के लिए रखा जाएगा। वह अवधि एक सत्र में, अथवा दो या अधिक आनुक्रमिक सत्रों में पूरी हो सकेगी । यदि उस सत्र के या पूर्वोक्त आनुक्रममिक सत्रों के ठीक बाद के सत्र के अवसान के पूर्व दोनों सदन उस नियम में कोई परिवर्तन करने के लिए सहमत हो जाएं तो तत्पश्चात वह ऐसे परिवर्तित रुप में ही प्रभावी होगा । यदि उक्त अवसान के पूर्व दोनों सदन सहमत हो जाएं कि वह नियम नहीं बनाया जाना चाहिए तो तत्पश्चात यह निष्प्रभाव हो जाएगा । किन्तु नियम के ऐसे परिवर्तित या निष्प्रभाव होने से उसके अधीन पहले की गई किसी बात की विधिमान्यता पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा ।]

9. [कतिपय उपबंधों का जम्मू-कश्मीर को लागू न होना]- जम्मू-कश्मीर पुनर्गठन (केन्द्रीय विधियों का अनुकूलन) आदेश, 2020 [अधिसूचना सं. का.आ. 1123(अ), तारीख 18-3-2020] तथा लद्दाख पुनर्गठन (केन्द्रीय विधियों का अनुकूलन) आदेश, 2020 [अधिसूचना सं. का.आ. 3774(अ) तारीख 23-10-2020] द्वारा लोप किया गया।

विदेशी भाषा का किसी स्वतंत्र राष्ट्र के राजकाज और शिक्षा की भाषा होना सांस्कृतिक दासता है। - वाल्टर चेनिंग

राजभाषा नियम 1976

सा.का.नि. 1052 --राजभाषा अधिनियम, 1963 (1963 का 19) की धारा 3 की उपधारा (4) के साथ पठित धारा 8 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार निम्नलिखित नियम बनाती है, अर्थातः-

संक्षिप्त नाम, विस्तार और प्रारम्भ--

इन नियमों का संक्षिप्त नाम राजभाषा (संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग) नियम, 1976 है।

इनका विस्तार, तमिलनाडु राज्य के सिवाय सम्पूर्ण भारत पर है।

ये राजपत्र में प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होंगे।

परिभाषाएं-- इन नियमों में, जब तक कि संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न होः-

'अधिनियम' से राजभाषा अधिनियम, 1963 (1963 का 19) अभिप्रेत है;

'केन्द्रीय सरकार के कार्यालय' के अन्तर्गत निम्नलिखित भी है, अर्थातः-

केन्द्रीय सरकार का कोई मंत्रालय, विभाग या कार्यालय;

केन्द्रीय सरकार द्वारा नियुक्त किसी आयोग, समिति या अधिकरण का कोई कार्यालय; और

केन्द्रीय सरकार के स्वामित्व में या नियंत्रण के अधीन किसी निगम या कम्पनी का कोई कार्यालय;

'कर्मचारी' से केन्द्रीय सरकार के कार्यालय में नियोजित कोई व्यक्ति अभिप्रेत है;

'अधिसूचित कार्यालय' से नियम 10 के उपनियम (4) के अधीन अधिसूचित कार्यालय, अभिप्रेत है;

'हिन्दी में प्रवीणता' से नियम 9 में वर्णित प्रवीणता अभिप्रेत है ;

'क्षेत्र क' से बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, उत्तराखंड राजस्थान और उत्तर प्रदेश राज्य तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, दिल्ली संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत है;

'क्षेत्र ख' से गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़, दमण और दीव तथा दादरा और नगर हवेली संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत हैं;

'क्षेत्र ग' से खंड (च) और (छ) में निर्दिष्ट राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों से भिन्न राज्य तथा संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत है;

हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान' से नियम 10 में वर्णित कार्यसाधक ज्ञान अभिप्रेत है ।

राज्यों आदि और केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से भिन्न कार्यालयों के साथ पत्रादि-

केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से क्षेत्र 'क' में किसी राज्य या संघ राज्य क्षेत्र को या ऐसे राज्य या संघ राज्य क्षेत्र में किसी कार्यालय (जो केन्द्रीय सरकार का कार्यालय न हो) या व्यक्ति को पत्रादि असाधारण दशाओं को छोड़कर हिन्दी में होंगे और यदि उनमें से किसी को कोई पत्रादि अंग्रेजी में भेजे जाते हैं तो उनके साथ उनका हिन्दी अनुवाद भी भेजा जाएगा।

केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से--

क्षेत्र 'ख' में किसी राज्य या संघ राज्यक्षेत्र को या ऐसे राज्य या संघ राज्य क्षेत्र में किसी कार्यालय (जो केन्द्रीय सरकार का कार्यालय न हो) को पत्रादि सामान्यतया हिन्दी में होंगे और यदि इनमें से किसी को कोई पत्रादि अंग्रेजी में भेजे जाते हैं तो उनके साथ उनका हिन्दी अनुवाद भी भेजा जाएगाः परन्तु यदि कोई ऐसा राज्य या संघ राज्य क्षेत्र यह चाहता है कि किसी विशिष्ट वर्ग या प्रवर्ग के पत्रादि या उसके किसी कार्यालय के लिए आशयित पत्रादि संबद्ध राज्य या संघ राज्यक्षेत्र की सरकार द्वारा विनिर्दिष्ट अवधि तक अंग्रेजी या हिन्दी में भेजे जाएं और उसके साथ दूसरी भाषा में उसका अनुवाद भी भेजा जाए तो ऐसे पत्रादि उसी रीति से भेजे जाएंगे;

क्षेत्र 'ख' के किसी राज्य या संघ राज्य क्षेत्र में किसी व्यक्ति को पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी में भेजे जा सकते हैं।

केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से क्षेत्र 'ग' में किसी राज्य या संघ राज्यक्षेत्र को या ऐसे राज्य में किसी कार्यालय (जो केन्द्रीय सरकार का कार्यालय न हो)या व्यक्ति को पत्रादि अंग्रेजी में होंगे।

उप नियम (1) और (2) में किसी बात के होते हुए भी, क्षेत्र 'ग' में केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से क्षेत्र 'क'या'ख'में किसी राज्य या संघ राज्यक्षेत्र को या ऐसे राज्य में किसी कार्यालय (जो केन्द्रीय सरकार का कार्यालय न हो) या व्यक्ति को पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी में हो सकते हैं । परन्तु हिन्दी में पत्रादि ऐसे अनुपात में होंगे जो केन्द्रीय सरकार ऐसे कार्यालयों में हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों की संख्या,हिन्दी में पत्रादि भेजने की सुविधाओं और उससे आनुषंगिक बातों को ध्यान में रखते हुए समय-समय पर अवधारित करे।

केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के बीच पत्रादि-

केन्द्रीय सरकार के किसी एक मंत्रालय या विभाग और किसी दूसरे मंत्रालय या विभाग के बीच पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी में हो सकते हैं;

केन्द्रीय सरकार के एक मंत्रालय या विभाग और क्षेत्र 'क' में स्थित संलग्न या अधीनस्थ कार्यालयों के बीच पत्रादि हिन्दी में होंगे और ऐसे अनुपात में होंगे जो केन्द्रीय सरकार, ऐसे कार्यालयों में हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों की संख्या, हिन्दी में पत्रादि भेजने की सुविधाओं और उससे संबंधित आनुषंगिक बातों को ध्यान में रखते हुए, समय-समय पर अवधारित करे;

क्षेत्र 'क' में स्थित केन्द्रीय सरकार के ऐसे कार्यालयों के बीच, जो खण्ड (क) या खण्ड (ख) में विनिर्दिष्ट कार्यालयों से भिन्न हैं, पत्रादि हिन्दी में होंगे;

क्षेत्र 'क' में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों और क्षेत्र 'ख' या 'ग'में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के बीच पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी में हो सकते हैं;

परन्तु ये पत्रादि हिन्दी में ऐसे अनुपात में होंगे जो केन्द्रीय सरकार ऐसे कार्यालयों में हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों की संख्या,हिन्दी में पत्रादि भेजने की सुविधाओं और उससे आनुषंगिक बातों को ध्यान में रखते हुए समय-समय पर अवधारित करे ;

क्षेत्र 'ख' या 'ग' में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के बीच पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी में हो सकते हैं;

परन्तु ये पत्रादि हिन्दी में ऐसे अनुपात में होंगे जो केन्द्रीय सरकार ऐसे कार्यालयों में हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों की संख्या,हिन्दी में पत्रादि भेजने की सुविधाओं और उससे आनुषंगिक बातों को ध्यान में रखते हुए समय-समय पर अवधारित करे ;

परन्तु जहां ऐसे पत्रादि--

क्षेत्र 'क' या क्षेत्र 'ख' किसी कार्यालय को संबोधित हैं वहां यदि आवश्यक हो तो, उनका दूसरी भाषा में अनुवाद, पत्रादि प्राप्त करने के स्थान पर किया जाएगा;

क्षेत्र 'ग' में किसी कार्यालय को संबोधित है वहां, उनका दूसरी भाषा में अनुवाद, उनके साथ भेजा जाएगा;

परन्तु यह और कि यदि कोई पत्रादि किसी अधिसूचित कार्यालय को संबोधित है तो दूसरी भाषा में ऐसा अनुवाद उपलब्ध कराने की अपेक्षा नहीं की जाएगी ।

हिन्दी में प्राप्त पत्रादि के उत्तर--

नियम 3 और नियम 4 में किसी बात के होते हुए भी, हिन्दी में पत्रादि के उत्तर केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से हिन्दी में दिए जाएंगे ।

हिन्दी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग-

अधिनियम की धारा 3 की उपधारा (3) में निर्दिष्ट सभी दस्तावेजों के लिए हिन्दी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग किया जाएगा और ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले व्यक्तियों का यह उत्तरदायित्व होगा कि वे यह सुनिश्चित

कर लें कि ऐसी दस्तावेजें हिन्दी और अंग्रेजी दोनों ही में तैयार की जाती हैं, निष्पादित की जाती हैं और जारी की जाती हैं।

आवेदन, अभ्यावेदन आदि-

कोई कर्मचारी आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिन्दी या अंग्रेजी में कर सकता है।

जब उपनियम (1) में विनिर्दिष्ट कोई आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिन्दी में किया गया हो या उस पर हिन्दी में हस्ताक्षर किए गए हों, तब उसका उत्तर हिन्दी में दिया जाएगा।

यदि कोई कर्मचारी यह चाहता है कि सेवा संबंधी विषयों (जिनके अन्तर्गत अनुशासनिक कार्यवाहियां भी हैं) से संबंधित कोई आदेश या सूचना,जिसका कर्मचारी पर तामील किया जाना अपेक्षित है, यथास्थिति, हिन्दी या अंग्रेजी में होनी चाहिए तो वह उसे असम्यक विलम्ब के बिना उसी भाषा में दी जाएगी।

केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में टिप्पणों का लिखा जाना -

कोई कर्मचारी किसी फाइल पर टिप्पण या कार्यवृत्त हिंदी या अंग्रेजी में लिख सकता है और उससे यह अपेक्षा नहीं की जाएगी कि वह उसका अनुवाद दूसरी भाषा में प्रस्तुत करे।

केन्द्रीय सरकार का कोई भी कर्मचारी, जो हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखता है, हिन्दी में किसी दस्तावेज के अंग्रेजी अनुवाद की मांग तभी कर सकता है, जब वह दस्तावेज विधिक या तकनीकी प्रकृति का है, अन्यथा नहीं।

यदि यह प्रश्न उठता है कि कोई विशिष्ट दस्तावेज विधिक या तकनीकी प्रकृति का है या नहीं तो विभाग या कार्यालय का प्रधान उसका विनिश्चय करेगा।

उपनियम (1) में किसी बात के होते हुए भी, केन्द्रीय सरकार, आदेश द्वारा ऐसे अधिसूचित कार्यालयों को विनिर्दिष्ट कर सकती है जहां ऐसे कर्मचारियों द्वारा,जिन्हें हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त है, टिप्पण, प्रारूपण और ऐसे अन्य शासकीय प्रयोजनों के लिए, जो आदेश में विनिर्दिष्ट किए जाएं, केवल हिन्दी का प्रयोग किया जाएगा ।

हिन्दी में प्रवीणता-

यदि किसी कर्मचारी ने-

मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर कोई परीक्षा हिन्दी के माध्यम से उत्तीर्ण कर ली है;या

स्नातक परीक्षा में अथवा स्नातक परीक्षा की समतुल्य या उससे उच्चतर किसी अन्य परीक्षा में हिन्दी को एक वैकल्पिक विषय के रूप में लिया हो; या

यदि वह इन नियमों से उपाबद्ध प्ररूप में यह घोषणा करता है कि उसे हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त है;

तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त कर ली है ।

हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान-

यदि किसी कर्मचारी ने-

मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर परीक्षा हिन्दी विषय के साथ उत्तीर्ण कर ली है; या

केन्द्रीय सरकार की हिन्दी परीकाा योजना के अन्तर्गत आयोजित प्राज्ञ परीक्षा या यदि उस सरकार द्वारा किसी विशिष्ट प्रवर्ग के पदों के सम्बन्ध में उस योजना के अन्तर्गत कोई निम्नतर परीक्षा विनिर्दिष्ट है, वह परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है;या

केन्द्रीय सरकार द्वारा उस निमित्त विनिर्दिष्ट कोई अन्य परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है; या

यदि वह इन नियमों से उपाबद्ध प्ररूप में यह घोषणा करता है कि उसने ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है;

तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

यदि केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में कार्य करने वाले कर्मचारियों में से अस्सी प्रतिशत ने हिन्दी का ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है तो उस कार्यालय के कर्मचारियों के बारे में सामान्यतया यह समझा जाएगा कि उन्होंने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

केन्द्रीय सरकार या केन्द्रीय सरकार द्वारा इस निमित्त विनिर्दिष्ट कोई अधिकारी यह अवधारित कर सकता है कि केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय के कर्मचारियों ने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है या नहीं।

केन्द्रीय सरकार के जिन कार्यालयों में कर्मचारियों ने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है उन कार्यालयों के नाम राजपत्र में अधिसूचित किए जाएंगे;

परन्तु यदि केन्द्रीय सरकार की राय है कि किसी अधिसूचित कार्यालय में काम करने वाले और हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले कर्मचारियों का प्रतिशत किसी तारीख में से

उपनियम (2) में विनिर्दिष्ट प्रतिशत से कम हो गया है, तो वह राजपत्र में अधिसूचना द्वारा घोषित कर सकती है कि उक्त कार्यालय उस तारीख से अधिसूचित कार्यालय नहीं रह जाएगा ।

मैनुअल, संहिताएं, प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, लेखन सामग्री आदि-

केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से संबंधित सभी मैनुअल, संहिताएं और प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, हिन्दी और अंग्रेजी में द्विभाषिक रूप में यथास्थिति, मुद्रित या साइक्लोस्टाइल किया जाएगा और प्रकाशित किया जाएगा।

केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग किए जाने वाले रजिस्टरों के प्ररूप और शीर्षक हिन्दी और अंग्रेजी में होंगे।

केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग के लिए सभी नामपट्ट, सूचना पट्ट, पत्रशीर्ष और लिफाफों पर उत्कीर्ण लेख तथा लेखन सामग्री की अन्य मदें हिन्दी और अंग्रेजी में लिखी जाएंगी, मुद्रित या उत्कीर्ण होंगी;

परन्तु यदि केन्द्रीय सरकार ऐसा करना आवश्यक समझती है तो वह, साधारण या विशेष आदेश द्वारा, केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय को इस नियम के सभी या किन्हीं उपबन्धों से छूट दे सकती है।

अनुपालन का उत्तरदायित्व-

केन्द्रीय सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व होगा कि वह--

यह सुनिश्चित करे कि अधिनियम और इन नियमों के उपबंधों और उपनियम (2) के अधीन जारी किए गए निदेशों का समुचित रूप से अनुपालन हो रहा है;और

इस प्रयोजन के लिए उपयुक्त और प्रभावकारी जांच के लिए उपाय करे ।

केन्द्रीय सरकार अधिनियम और इन नियमों के उपबन्धों के सम्यक अनुपालन के लिए अपने कर्मचारियों और कार्यालयों को समय-समय पर आवश्यक निदेश जारी कर सकती है ।

सरलता, बोधगम्यता और शैली की दृष्टि से विश्व की भाषाओं में हिंदी महानतम स्थान रखती है ।

- डॉ. अमरनाथ झा

आपके पत्र : आपकी प्रतिक्रियाएँ

आँचल पत्रिका के 22वें अंक की पाठकीय प्रतिक्रिया बहुत सारे कार्यालयों से आई हैं । इन सहृदय कार्यालयों के हम आभारी हैं जिन्होंने अपनी प्रतिक्रिया और अमूल्य सुझावों से पत्रिका की गुणवत्ता और पाठकीयता को समृद्ध करने में हमारी मदद की ।

क्रम संख्या	कार्यालय का नाम	पत्र संख्या
1	कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी), पंजाब एवं यू.टी. चंडीगढ़ - 160017	रा.भा.अ./पत्रिका समीक्षा/2-10 दिनांक 24.04.2025
2	कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी) पश्चिम बंगाल	राजभाषा अनुभाग/पत्रिका प्रतिभाव/04 दिनांक 05.05.2025
3	कार्यालय प्रधान महालेखाकार, (लेखा व हकदारी), तमिलनाडु, 361, अन्ना सलाई, तेनाम पेट, चेन्नई - 600018	हिंदी कक्ष/Hindi Cell/प्र.प./A.I./2024-25/2512 दिनांक 25.04.2025
4	कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी) हिमाचल प्रदेश, शिमला - 171003	म.ले./ले.व.ह.)/हिं.प./पत्रिका समीक्षा/2025-26/07 दिनांक 21.04.2025
5	कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (खान), पश्चिम बंगाल, कोलकाता - 700001	122/डीजीए(खान)/हि.पत्रिका/पावती/2025-26 दिनांक 30.04.2025
6	कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, दक्षिण रेलवे, पार्क टाउन, चेन्नै - 600003	एसए/हिंदी पत्रिका/2024/260 दिनांक 23.04.2025
7 8	कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, केन्द्रीय व्यय, कोलकाता शाखा	I/976991/2025 दिनांक 16.05.2025
9	कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), असम	ई-मेल दिनांक 28.05.2025
10	कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-II, महाराष्ट्र, नागपुर	ई-मेल दिनांक 02.06.2025

किसी भी लम्बी से लम्बी या कठिन से कठिन यात्रा की शुरुआत हमेशा पहले कदम से होती है । हिंदी में काम करना आसान है, शुरु तो कीजिए !

योगदान / नियुक्तियाँ / पदोन्नतियाँ / स्थानांतरण / सेवानिवृत्ति

(01.03.2025 से 31.08.2025 तक)

योगदान/नियुक्तियाँ

क्र.सं.	नाम	पदनाम	दिनांक
1	श्री सुशील टोपनो	व.ले.प.अ	03.03.2025
2	श्री सुरेश कुमार पांडिया	स.ले.प.अ.	07.04.2025
3	श्रीमती स्मृति कुजूर	व.ले.प.अ	07.04.2025
4	सुश्री प्रिया सिंह	ले.प.	17.07.2025
5	श्री अभय भंडारी	ले.प.	31.07.2025
6	श्री नितिन राजपुरोहित	ले.प.	05.08.2025
7	श्री मनोज पांडेय	स.ले.प.अ.	18.08.2025

स्थानांतरण

क्र.सं.	नाम	पदनाम	दिनांक
1	श्री प्रवीण कुमार एम.	व.ले.प.अ	07.03.2025
2	श्री जी. आर. राजेश	व.ले.प.अ.	20.03.2025
3	श्री सी.के. शफी	व.ले.प.अ.	09.05.2025
4	श्री सचिन हूडा	स.ले.प.अ.	09.05.2025
5	श्री भरत लाल मीणा	स.ले.प.अ.	09.05.2025
7	सुश्री शिल्पी	स.ले.प.अ.	30.05.2025
8	श्रीमती प्रीति	ले.प.	17.06.2025
9	श्री रोहित सिंह	स.ले.प.अ.	11.07.2025
10.	श्री रवि सक्सेना	स.ले.प.अ.	31.07.2025
11	श्री तरुण बजाज	स.ले.प.अ.	31.07.2025
12	श्री जितेन्द्र सिंह	स.ले.प.अ.	31.07.2025
14	श्री विक्रम राज मीणा	स.ले.प.अ.	31.07.2025
15	श्रीमती बिन्दु वर्मा	स.ले.प.अ.	08.08.2025
16	सुश्री ज्योत्स्ना	स.ले.प.अ.	14.08.2025
17	श्री रोहित नागर	स.ले.प.अ.	14.08.2025

सेवानिवृत्ति

क्र.सं.	नाम	पदनाम	दिनांक
1	श्रीमती पी. हेमलता	सहा.पर्य.	30.04.2025
2	श्री महेन्द्र गोंडके	बहुकार्य कार्मिक	30.05.2025
3	श्री नरेन्द्र मोरे	कैंटीन सहायक	31.08.2025

"आँचल" परिवार नवनियुक्त और योगदान करनेवाले सभी अधिकारियों/कर्मचारियों का स्वागत करता है एवं आपके सफल एवं सुखद करियर की कामना करता है । **"आँचल"** परिवार स्थानांतरित हुए और सेवानिवृत्त हुए सभी कार्मिकों को हार्दिक शुभकामनाएँ देता है ।

चित्रों के झरोखों से

कार्यालय में अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोह

प्रधान निदेशक महोदय द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर कार्यालय की महिला अधिकारियों का सम्मान

सेवानिवृत्त जीवन के लिए असीम शुभकामनाएँ

आँचल